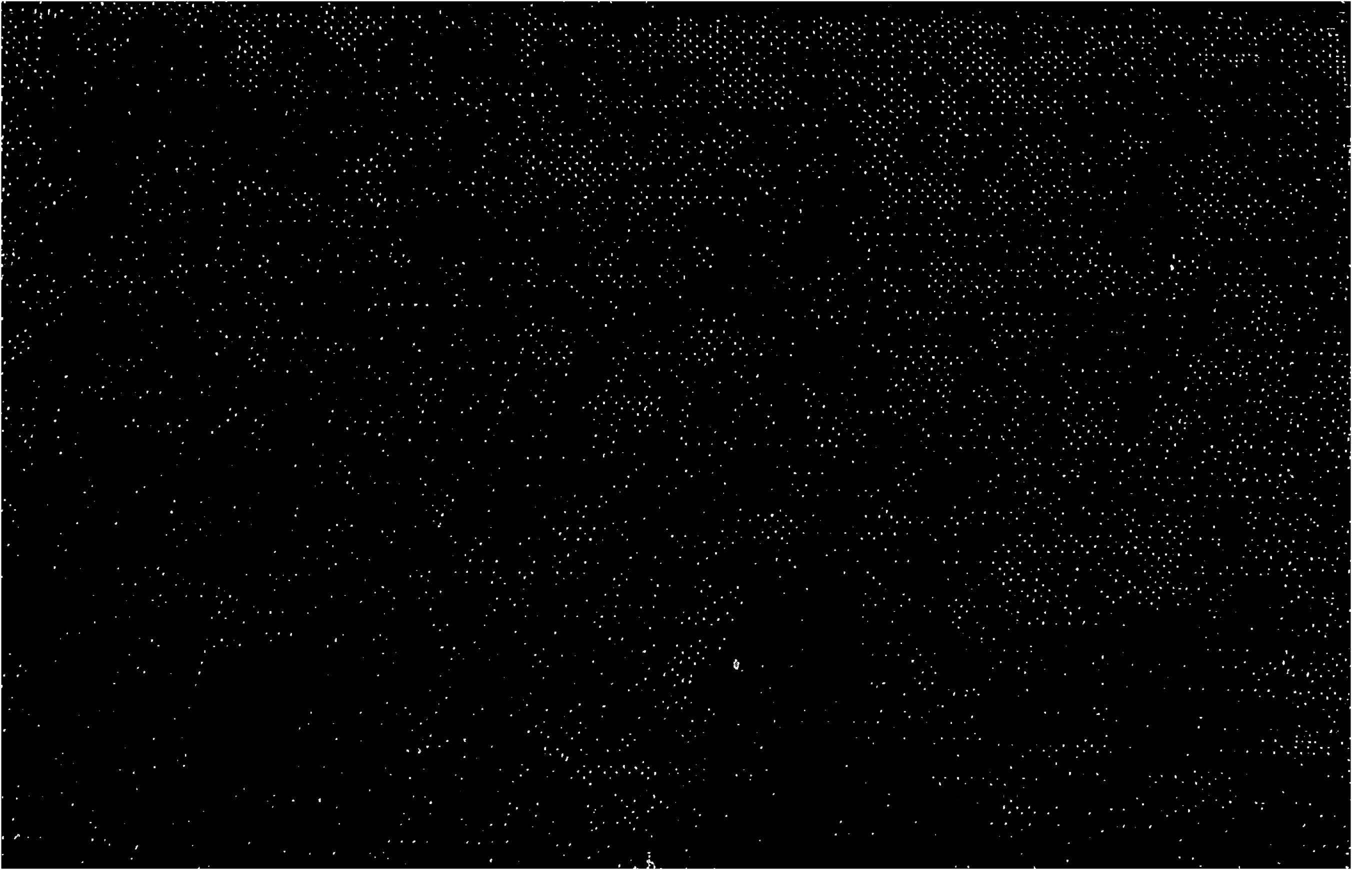


Size :- 16 X 10 cm

Leaf - 71.

लावै॥ जाविधि तुमरे मन कों भावै॥ दोहा॥ सिखर वंध मंदि
र लिख्यो सब विधि कागद माहि॥ सब हि अनुक्रम युक्ति सों प्रभु
हिं निवेद्यो वाहि॥ सोरठा॥ वाकों धर्यो वनाय दूसर की आयस
दयी॥ सिखर वंध ही भाय लिखि लायो प्रभु पद धर्यो॥ ३२॥ चौपा
ई॥ आयस करी टेमो दूर दास सहिं॥ श्रीजी की इच्छा ह्यो भास हिं॥ सिख
र वंध ही प्रभु मन भायो॥ यातें दोऊ लिखि यह लायो॥ तातें काल कु
छुक ही व्राजै॥ म्लेच्छ उपद्रव तें उठि भाजै॥ और देस कों आपु पधारै
को रक काल तहां हिं विहारे॥ पाछे आवै व्रज हिं विराजै॥ एक हरि और
धर निग्रह भ्राजै॥ तीन सिखर गिरिराज हिं सोहै॥ आदि सिखर रक
स व मन मोहै॥ दूसर व्रह्म सिखर अति सुंदर॥ देव सिखर तीसर गु
ण मंदिर॥ आदि [illegible] ताके [illegible]॥ [illegible] तनग्र वगि

श्री
वा
१६

रिधर॥ब्रह्मसिखरपाद्देविहरेप्रभु॥याविधिश्रीउतसदासुखद
विभु॥दोहा॥आदिदेवदोऊसिखरगुमरहैंगिरिराज॥ब्रह्मसि
खरगोचरदरसभक्तजननकेकाज॥सोरठा॥श्रीगोवर्द्धनना
थसवदिनश्रीउतगिरिसदा॥यहआयसमुखसाथश्रीमुखगि
रिधरप्रगटकरि॥७७॥चौपाई॥संवतपंद्रहसौउनसाठा॥दिसा
खसुक्लतृतीयासुभठाठा॥शोदिणआदितवारसुवाछिन॥धरी
नीमंमंदिरकीतादिन॥पूरनमल्लसेठइकप्रभुपर॥लक्षाधिक
कछुमुद्रातापर॥लक्षमुद्रिकामंदिरलागी॥कछुकरहीवाके
घरजागी॥मंदिरवन्योआधतेथोरा॥तबउनकसेयोविचारिवहो
रा॥बाकीधनतेंनाहिनहोई॥करोंजायब्याहारहिकोई॥वाकी
धनलैगयोदखिनकों॥तहांजायलायोरतननकों॥विक्रय

कीनें आयजु आप ही ॥ तीन लाख धन वातें हो ही ॥ दोहा ॥ बरस बीस
लागे तहां क्रय विक्रय में वांहि ॥ नहां तांइ गिरिवरधरण व से प्रथ
म गह मांहि ॥ ब्रजवासिन सें खेलवो नित प्रति नयो विहार ॥ निज
इछा तें नहि कर्यो मंदिर सुखद सुढार ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ आयो पूरन
मल्ल नाथ पद ॥ सीस नायदं औत करी नद ॥ भयो मोद मन पद ट र
स्यो जब ॥ मोर मनोरथ नाथ मानि तव ॥ यह हुती सेवन की आसा ॥
मोरे हाथ होय सब रासा ॥ अपुनों जानि नाथ पन राख्यो ॥ मंदिर सो
वा प्रभु मुख भाष्यो ॥ वा ही दिन तें दीय लगाई ॥ सेवक मंदिर नाथ
बनाई ॥ रामदास चौहाण सु सेवक ॥ करत तरह नाथ पद सेवक
पूरव मंदिर गिरिधर आजे ॥ ब्रज में सब सुख रहें सु भ्राजे ॥ इतनें
मंदिर सिधि ही भयो ॥ पूरन मल पूरन सुख दयो ॥ दोहा ॥ उनं

श्री
वा
७

चास्तकेसालतेंमंदिरकोआरंभ॥ ६ ॥सत्तरपूरनभयोमंदिरना॥
थमुलंभ॥सोरठा॥श्रीमद्वल्लभआयवसुधाक्रमणविस्तारिकें
दंउवत्तप्रभुसोंआयकरीसिद्धमंदिरभयो॥ ७ ॥चौपाई॥सवत्तप
द्रह्सोहैसत्तर॥विसाखसुलछत्तीयासुनिघत्तर॥निजकरगि
रिधरपाटविराजे॥मंदिरमध्यसाजसवसाजे॥माधवेंद्रपुरि
मुखीयाकीनो॥सेवकउनकेसेवनदीनो॥क्रस्नदासअधिकारी
रीराख्यो॥कुंभनदासकीर्तनीभाख्यो॥याविधिसेवाप्रभुकीसौं
पी॥करयोसमाजसेवकाचौंपी॥कछुदिनरहिप्रभुसेवनकीनी
पाछेंप्रभुसोंआयसलीनी॥आपुपधारेकरिसवधानी॥सेवन
सवकोंदईसुमानी॥प्रभूपधारेधरणिक्रमणकों॥सेवकसक
लधरेसरणकों॥दोहा॥नागाच्चतुराएकदिनगोविंदकुंउपैआर

रोटीवरीवनायकरिभोगधरीव्रजराइ ॥सोरठा॥माधवेंद्रपुरिना
थभोगधरैयावाह्रीसमय॥मंदिरमध्यवनायतज्योपधारेकुंउपै
॥७६॥चौपाई॥चतुरनागाकेप्रभुआए॥ह्तीसमानतनकनह्रि
धाए॥पाहुमंदिरनाथपधारे॥माधवेंद्रपुरिजायपुकारे॥भूषो
रह्योंनांह्रिह्रौंधायो॥फिरिमाकोंतूभागसरायो॥मुकुटकाछिनी
तूनितधरिहै॥उत्सवदिनापागतूकरिहै॥नितप्रतिचंदनमो
कोंधरिहौ॥मोकोंनाह्रिनआछोपरिहौ॥तदपिमह्राप्रभुकान
करतहौं॥जातेंतेरोकरयोसहतहौं॥जद्यपियह्रसबनायनभा
वै॥मनमेंराखेकानधरावैं॥एसेकरतगयेदिनबीती॥चौदहव
र्षनाथकोंभीती॥दोहा॥वंगालिनकीसेवप्रभुचौदहवर्षप्रमा
नि॥मानीनाह्रिनप्रेमसोंकरैंमह्राप्रभुआनि॥सोरठा॥कब

श्री वा १८

किवृंदादेविधरेंनाथकेनिकटवहु॥प्रभुकेमननसुहायया॥वि
धिप्रभुसहचुपरहें॥चोपाई॥नीठिनीठिप्रभुआयसकीनी॥सो
अवधतदासमुनिलीनी॥कृष्णदासअधिकारिहिकह्योयो॥मोसु
खतेंजायमुनेह्यो॥बंगालीधनमेरोलह्यो॥चोरचोरनितप्रतिदे
ही॥तातेंतुकाढेगोरनको॥नाहिनरारेवामेंअववितनको॥जोलों
सेवाकरीवंगाली॥गयेस्वधाममहाप्रभुसाली॥तवहीस्वदसवन
कोकाढे॥लहुनमारिवंगालीडाढे॥रहेमाधवेंद्रपुरिसेवएकही
अधिकारीअनुसारटेकही॥याविधिसेवनकरतभयेसाज॥प्र
भुआयससिरधरिकेंउाजु॥दोहा॥श्रीमदवल्लभसुवनवउश्रीमद
गोपीनाथ॥तीनवर्षलोंनिजकरनकरीसेवगिरिनाथ॥सोरठा
॥वंगालीकछुसाध्यकरेंसेवगिरिधरणकी॥भूषनपात्रनसाज

एक लाख धन के को ये ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥ श्रीमद् गोपीनाथ सुवन है
श्रीपुरुषोत्तम नाम जुत्ति न है ॥ इन को हाथ पकरि गिरिधारी ॥ प
हुंचे गिरि कंदर सुखकारी ॥ धरे मां रु ली लामें सो ई ॥ गये सदेह अ
लौकिक जाई ॥ सदा सर्वदा प्रभु सों खेलें ॥ व्रजभक्तन के संग सु भं
लें ॥ पुत्र विरह श्री गोपीनाथा ॥ गये पुरुषोत्तमपुरी सु साथा ॥ पु
त्र वियोगज दुख विसरायो ॥ श्रीवलदेव रूप प्रभु पायो ॥ उनके वि
ग्रह में ह्वै लीना ॥ नाथ आपु नें धाम सुचीना ॥ लीला मां रूप धारे
सोऊ ॥ पिता पुत्र निज धाम सु दोऊ ॥ दोहा ॥ श्रीमद् वल्लभदेव के
छोटे पुत्र अनूप ॥ श्रीमद् विठ्ठलनाथ प्रभु श्रीगिरिधर को रूप
॥ सोरठा ॥ सदा सर्वदा नाथ करैं सेव निज नाथ की ॥ एक ही रूप
उदार करैं करावैं सेव निज ॥ ३९ ॥ चौपाई ॥ जब सेवा में आपु वि

श्री वा १८ राजे॥ बंगाली सब काठे भाजे॥ गौड विप्र राखे प्रभु सेवक॥ सदा प्र
भु सों प्रेम सु टेवक॥ जानि नाथ के इच्छाचारी॥ भयो राज विठ्ठल
गिरिधारी॥ माधवेंद्र कों आय सदीनी॥ अमल मलय गिरि चंदन
लीनी॥ मो कों अप्पैं तुम ल्हीलाई॥ करी दंडवत मन भाई॥ लेन चा प्रभु
ल्यो माधव पुरि चंदन॥ प्रभु पद सिर धरि करी सु वंदन॥ चलत चे
लत पै उमैं जाई॥ दक्षिण चल्यो प्रेम मन भाई॥ गोपीनाथ उगर
में रस॥ धर्म साल में रह्यो सु परस॥ दोहा॥ तहां जाय सा यांनि
सी मन में करत विचारि॥ अटका वकु विधि खीर के चढे सु प्रभु नि
रधारि॥ सोरठा॥ जथा श्री गोपीनाथ धरें भोग सब खीर को॥ ना
हिन गिरिधरनाथ कबहु समर्प्यो खीर में॥ ४०॥ चौपाई॥ पश्चा
ताप करत मन मांही॥ सैन भोग आयो प्रभु पांही॥ अटका एक

डुरायो प्रभुतत व ॥ पं उ्यालरनलगेग्राप स्तजव ॥ घटेयोएकग्रटका
नहिपायो ॥ तवश्रीगोपीनाथप्रभुनायो ॥ ग्रहैएकग्रटकाहमपाहि
डुस्यो सिंहासनकेतरमांही ॥ यहहमचोस्योग्रटकायातें ॥ माध
वेंद्रपुरिग्रायेताते ॥ मुखीयाहेगिरिधरलालको ॥ जायपुका
रोधर्मसालको ॥ यहग्रटकालेदेवो वाही ॥ उनको नामपुकारो
जाही ॥ पंउ्याग्रटकाकोंघलायो ॥ फिरतपुकारतउेलतग्रा.
यो ॥ रनजवप्रभुन्यापुकारतहमको ॥ बोल्योकाहेएंघतहम
को ॥ दोहा ॥ तवदेदीयोग्रटकारन्हेपठ्योश्रीगोपीनाथ ॥ मुखीया
तुमश्रीनाथकेलेऊहमरेहाथ ॥ सोरठा ॥ तवहीभयोप्रसन्नले
ग्रटकामाथेधरयो ॥ नाहिनमोसमधन्यकहोभागनिजजानि
कें ॥ ४१ ॥ चोपाई ॥ तवतेंनामभयोप्रभुरारा ॥ गोपीनाथक्षीरा

श्री
वा
२०

केचेरा॥ तातेंआगे गह्यौगुसांई॥ तैलंगदेसराजहौजांई॥ इनको
राजासेवकसोऊ॥ माधवमत्तके गुरुहैओऊ॥ गुरूदेखिकीनों
सनमाना॥ विनतीकरीनाथनिजजाना॥ स्वामिकवनकार
नपगधारे॥ मोपावनकेहेतपधारे॥ तवआयसकीनीनिजप्र
भुकी॥ मोकोंचंदनमलयागिरिकी॥ श्रीगोवर्द्धननाथपठायो
वाकोंलेनउहांतेंआयो॥ तहांजायकेंचंदनल्याऊं॥ प्रभुकोंअ
पुनेहाथधराऊं॥ दोहा॥ सुनिविनतीवानेकरीह्वैमुहामोपास
मलयागिरिकेंअसलहैप्रभुकोंअर्पोजास॥ सोरठा॥ करेंसवा
मणतेलअगनियोगतेंउससव॥ घसितोलाभरिमेलिआरतसी
ततहोयतव॥४५॥ चौपाई॥ एसोहैयहचंदनदेवा॥ करोनाथ
कीसुखसोंसेवा॥ हाथजोरिप्रभुकरीवेनती॥ जोभावेसोधरो।

दीनती॥करवावौदरसनगिरिनाथा॥चलौप्रभूकेपदजुगसा-
था॥माधवेंद्रपुरिमुनिमृदुवानी॥चलौसंगसुतदैरजधानी॥वा
नैंदीनौंराजततनुजकौं॥एकलचल्यौसंगपदरजकौं॥एकभाररा-
जासिरलीनौं॥माधवेंद्रपुरिदीनौंदूजो॥गुरुसिखदोऊचलेत-
हांते॥चलतचलतआवतभएवांहतें॥आएकासीकेढिगदोऊ॥पु
ष्करणीकेतीरसुआऊ॥दोहा॥स्नानादिकहिंविधायकैंसोयेउ-
पवनजाय॥ध्याननधरयोगिरिधरणकौंतवहिंपधारेआय॥सो
रठा॥अंतरजामीनाथजान्योलायोचंदनहिं॥तवश्रीगिरिध
रआपुदीयोदरसनिजप्रगटकैं॥७॥चौपाई॥ग्रीषमरितुहि
यहजीयजानी॥आयसकरीआपुमनमानी॥चंदनघसिकैं
मोहिधरावौ॥आतपप्रवलअंगपैसुसरावौ॥प्रभुआयसतेंघिसि

श्री
वा
२२

दिंलगायो॥ हरेनारियलकेलालायो॥ निजप्रभुअर्पनकरे॥
प्रेमसों॥ आपुअरोगेदासनेमसों॥ दूप्रसन्नप्रभुआयसदीनी
निकटहिमाचलव्रजतेंचीनी॥ तातेंवारहमासनरुचिहो॥॥
ग्रीषमकालउचितहैसुचिहो॥ तुमरोमनहैसवरितुमांहो॥
तातेंमलयागिरिदोउजांही॥ दक्षिणारहोजायगुरुचेला॥॥
आतपहोयसकलरितमेला॥ दोहा॥ वैठकमेरीहैजहां म॥
लयाचलकेसीस॥ रहौजायदोऊतहांचंदनअर्पौपीस॥ सोर
ठा॥ लीयेंजाऊतुमसंगराजाकरेंप्रचारगी॥ होतनांहिमनभं
गहिमगोपालविराजिजहं॥ ४॥ चौपाई॥ वागापहिरेंचंदन
कोनित॥ वसेंसदाचंदनकेवनहित॥ तहारहेंदरसनहितआ
वैं॥ तहांजाउदोऊसेवसरावैं॥ मेरीसेवाव्रजमेंहोवै॥ श्रीगा॥

स्वामि सदा ही जो वै ॥ ता तें तुम प्रतिय है निदेसा ॥ रहो जायम
लयागिरि देसा ॥ भूषन वसन विचित्र वनावै ॥ रितु रितु के सब
साज धरावै ॥ सब सामग्री विधि सों करि हैं ॥ विविध भांति मे कों
अनुसरि हैं ॥ नाना विधि सों मोहि लड़ावैं ॥ अनिक सुगंध न
सों ज मंजावैं ॥ या विधि आय सकरि के देवा ॥ अंतरधान भये
सु रसेवा ॥ दोहा ॥ श्री गिरिधर गिरिराज पै आय विराजे नाथ ॥ कृ
रत भये आय स सकल माधवेंद्र पुरि साथ ॥ सोरठा ॥ यह तन लो
कि कत्यागि गये तहां तें मलयगिरि ॥ भये नाथ की सेव देहा लौ
किक धारि कैं ॥ भई प्रगट यह बात तमास षट कवीते जव हिं ॥ चं
दन ली नें जात माधवेंद्र पुरि तनुत ज्या ॥ ४५ ॥ चौपाई ॥ श्रीमदवि
ठ्ठलनाथ गुसांई ॥ कही सकल माधव पुरी भाई ॥ श्री मुख तें आय स

श्री
वा
२२

यहकीनें॥माधवेंद्रपुरिसुखसोंभीनें॥कीनोंभावप्रासुसंपूरण॥
प्रेमलक्षिणाभक्तिप्रपूरण॥सारभूतगरुढ़णीजिनसेवा॥सेवक
ग्रैसनाहिनहेवा॥कृपाद्रतीगिरिधरणलालकी॥तैंसीयश्रीम
लाप्रभुनमालिकी॥ताहीविधिश्रीस्वामिलालकी॥अवदीकहीं
सुनोंप्रनालकी॥द्रतैतिलंगदेसकेद्विजवर॥संप्रदायमाधवके
मुखकर॥आचारयहेसंप्रदायके॥गुरुरूहतेकृसचैतनिके॥गौ
उदेसकीआयसुधरिकें॥सवीगौडियारनकेघरिकै॥संन्यासली
योकासीमेंआई॥यहेतहांप्रीतिपदपाई॥दोहा॥जवश्रीवल्लभदेव
कोभयोयज्ञउपवीत॥अपुनेंदेसीजानिकैंकह्योश्रीलक्षमणप्रीत
॥सोरठा॥तुमहोपरमउदारयालरिकाकोंविसदकरि॥वेदपढा
योचारिजानिअपुनवालकतुमउ॥४६॥चौपाई॥वेदपढेचारों

षटमासा॥ सांगोपांग सकल रनपासा॥ सकल शास्त्र अध्ययन क
रे जब॥ गुरुदक्षिणा कों कह्यो प्रभु तब॥ जो वर मांगो देहुं आपु कों॥ र
नतव मान्यो देह नाथ कों॥ मुनि इन विनती करी जोरि कर॥ दिव्य
दृष्टि भई मो कों मुनिवर॥ यह वर मांगो दास भाव तें॥ देहु कृपानिधि
ध्यावत तें॥ प्रगट करै जब आपु गुसांई॥ श्री गिरिधर कों गिरिवर
मांहि॥ कृपा आपु की सब मोहि दीसे॥ चरित नाथ को सगरो जी सै॥ क
हु सेवा को लेस देहु प्रभु॥ गुरुदक्षिणा में यह मां कों विभु॥ मुनि कें वि
नय नाथ मुसिकाये॥ श्री मुख तें यह आयस भाये॥ श्री गिरिधर की
सेवन दीनें॥ जो लों प्रभु मानें सुख भीनें॥ दोहा॥ व्रजमंडल में कौंज
वै जाय विराजौं पाट॥ तुम कहूं तब व्रज आइयो चलत तचलत गिरिराट॥
सोरठा॥ तुम्हें हि सेव मेंरा खिहौं परिकंमा मिस फिरैं॥ यह सब कही

श्री वा २३

सुनायपाछेंप्रभुनेंगृहगये॥१७॥चौपाई॥ येहसुनिश्रीमुखबच
नसुहाए॥हाथजोरिवहुविनयसुभाए॥मनमेंभएमगनबहु
भाती॥नाथकवनदिनहोयसुराती॥एसेंइकरतकालकछुवी
त्यो॥श्रीवल्लभव्रजमेंरनचीत्यो॥जवश्रीगिरिधरपाटबिठारे
एहूरतनेंआयपधारे॥तवेंनाथसेवागिरिधरकी॥सोंपीइन्हें
जानिनिजवरकी॥चौदहवर्षवातप्रभुमानी॥सेवाप्रभुनीइन्हे
करसानी॥इनकीकानवगालीकुराषे॥सेवारसवेनाहिनचाषे
तातेंइनकूंदयोपठाई॥सुमिरनकरोजायमनलाई॥दोहा॥मो
रीसेवाकरतहेंश्रीमदविठ्ठलनाथ॥सदासर्वदाभावतेंरहोमुदित
इनसाथ॥सोरठा॥आपुविराजेनाथश्रीगिरिधरगिरिसिखरपे
सेवततबबहुसुतसाथश्रीगोस्वामिकृपालप्रभु॥१८॥चौपाई॥प्रग

ट भये जव श्री गिरि नाथा ॥ अष्ट सखा तव भूतल साथा ॥ अष्ट छाप
विख्यात प्रभावा ॥ गावैं लीला नित प्रति चावा ॥ नाम कहौं तिनके मन
लाई ॥ मो पै रहैं कृपाल सदाई ॥ सखा कृस्न इक नाम ममहोना ॥ दूसर
सखा तोक परिमाना ॥ तीसर ऋषभ सखा है सोई ॥ चौथो सुबल ना
म जिहि होई ॥ पंचम अर्जुन सखा सुजाना ॥ छठो विसाल सखा परि
माना ॥ सप्तम सखा भोज गुन धारी ॥ अष्टम श्रीदामा सुखकारी ॥ ए
ही अष्ट छाप भए आई ॥ तिनके नाम तिनहि की छाई ॥ दोहा ॥ श्रीमु
ख सों श्री द्वारिकानाथ प्रगट करि नाम ॥ सो सब कहौं प्रनाम करि
सखा सकल अभिराम ॥ छंद ॥ सूरदास सों कृस्न तोक परमानंद
जानौ ॥ कृस्नदास सों ऋषभ स्वामि छीत सों सुबल बषानौ ॥ अर्जुन कुं
भनदास चतुरभुज दास विसाला ॥ नंददास सों भोज स्वामि गोविंद

श्री
वा
२४

श्रीमाला ॥ दोहा ॥ अष्टछापआठोंसखाद्वारिकेशसुखमान ॥ जिनकेकृतगुनगानकरिनितब्रजहोतसुथान ॥ ४५ ॥ चोपाई ॥ श्रीगोस्वामिप्रगटसोपहिले ॥ अमितभांतिगिरिधरब्रजखेले ॥ अवरकचरितकहोंगिरिधरका ॥ सुनतसुखदलागेमनसरका ॥ कासीकोनागरइकद्विजवर ॥ व्याहभयोवाकोबउनगर ॥ लियेंबहुकोंकासीजावत ॥ सेविकनीगोस्वामिमनावत ॥ वाकोंतवेंमहरदआई ॥ देखश्रीगिरिधरनसुहाई ॥ बहुबालिस्वामीसमुझावो ॥ मोकोंगिरिधरनाथदिखावो ॥ अहैयहांगिरिवरकेऊपर ॥ हमरीकुलकेदेवजुभूपर ॥ तातेंउनकोदरसनकरते ॥ चलोतहांप्रभुचलतेचलते ॥ कुतापरंतुसेविमतसोऊ ॥ बहुप्रेमतेंआयोओऊ ॥ दोहा ॥ भागसमयदरसनकीयेबहुभईसुखसार ॥ वाकेंआरतवढीत

वविनयकरीसुविचार ॥ सोरठा ॥ याकोसंगछुड़ायराखोचरन
नरजततरे ॥ वांहगहीहीआपुपकराई गोस्वामिजू ॥५०॥ चौपाई ॥
वाकीवहविनयहोंकीनी ॥ सुनिआरततांकीप्रभुचीनी ॥ कानमा
निरवेचीनिजओरी ॥ धरीसदेहआपुनीठोरी ॥ द्रसनकरतसक
लकेमांही ॥ गिरिधरकरगहिधरीजहांही ॥ देखतहीवाकोनि
जलीला ॥ धस्योप्रभुआपुनसुखसीला ॥ ताकोपतिमरिवेकोंवे
ठ्यो ॥ मननिरधारनाथसनपेंठ्यो ॥ श्रीगोस्वामिपकरिकेंवाह
द्रस्योजायविहारसुताहे ॥ देख्यावानेगोपीमंडल ॥ वाहूदेखीउ
नमधिमंडल ॥ तवसंदेहमिट्योसवदेखी ॥ भयोनाथकीसरनविं
सेषी ॥ सवलीलाअनुभवतिहिंकीनों ॥ द्रसरजनमगंठीलीलीनों
स्यामपषावजिप्रगटतभयो ॥ द्विजवरजन्मसकलसुखदयो

श्री
वा
२५

॥दोहा॥ वाके घर वेटी भयी ललिता जाको नाम॥ वीन वजावत
अति सुखद सकल लोक अभिराम॥ सोरठा॥ दोऊ वेटी वा प्रवी
न पषावज संग मिलि॥ करैं नाथ गुन गान श्री गिरिवर धरना
थ के॥ ५५॥ चौपाई॥ ताके सुनि वे कों गिरिधारी॥ गये एक निसि
रहित हसारी॥ भयो प्रात आए उठि तहं तें॥ संख नाद धुनि सु
नि निज गृह तें॥ दूर से गिरिधर नाथ उनी दे॥ गोस्वामिन ह्या
ला ल सुनी दे॥ पूछयो वा वाक हां व से निसि॥ हंसि प्रभु कह्यो रहे
जहं निसि वासि॥ स्याम पषावजि गावत रह्यो॥ ललिता वीन सुनत त
हीं ह्यौ॥ सगरी निसि पितु वेटी मिलि दोऊ॥ सुनत रह्यो कीतन उ
न के सोऊ॥ रंग रह्यो ह्यां छाय सदन में॥ तहां उनी दो रह्यो मगन मे
प्रभु वच सुनत वुलाए दोऊ॥ श्री गोस्वामि नामदीयो सोऊ॥ दोहा

॥ राखे प्रभु की सेव में बेटी अरु उन्ह वापु ॥ जन्हां जन्हां क्री ठाकरे श्री
गिरिधर प्रभु आपु ॥ सोरठा ॥ अहे द्वाप प्रभु खमानि सेवा की तिनकी
करैं ॥ स्याम पषाव जि साथ ललिता वीन व जावहि ॥ ५२ ॥ चौपा
ई ॥ या विधि सेवा श्री गोस्वामी ॥ करैं नाथ की अंतरजामी ॥ सुन
त सुनत ब्रजवासी आवैं ॥ देवदमन प्रिय गाय लिआवैं ॥ एसैं क
रत अमित ब्रजवासी ॥ भेट करैं गिरिधर गोरासी ॥ काहू एक दो
य लैकोई ॥ एसेइ करत गाय वहु होई ॥ चौविस गामत रैह टी
मांही ॥ भेट करैं गो गिरिधर आंही ॥ उनसब मिलि यह मतो वि
चारयो ॥ देवदमन हित यह निरधारयो ॥ वढीया श्री गिरिधर कौ
देवौ ॥ वछ राजन में आपुन लेवौ ॥ एसे गाय हजार न होई ॥ दूधद
ही माखन घर सोई ॥ अपुनो हि गिरिधर लाल अरोगें ॥ सब सुख

श्री
वा
२६

दासमदानितभोगें॥दोहा॥लाखरुपैयावरसकेवांधेतवहिं
कृपाल॥सामग्रीकेहेतसोंलाउठोरहूंलाल॥सोरठा॥उतसव
विधिसोंसेवसकलमहोत्सवविधिसहित॥श्रीगोस्वामिउदार
मर्यादावांधीविसद॥५३॥चौपाई॥एकटहेउधरेंव्रजजनकी
राजभोगमधिधरेसुपनकी॥औरसमानसकलघरहीकी॥॥
याविधिसेवनगिरिधरपीकी॥एकादिनाइकसेवकदेख्यो॥टू
कटूहेडीमांऊसुपेख्यो॥लेतप्रसादऊतेसवसेवक॥राजभोग
पाछेतेंदेवक॥विनयकरीगोस्वामिनपाहीं॥निकस्योटूकटहे
डीमांहीं॥सुनिटहेउकीकरीजुनाहीं॥धरौटहेउहोयघरमांही॥राजभोगदूसरदिनआयो॥तवश्रीमुखगिरिधरनसुना
यौ॥गोपिनाथसुनरामदासतें॥देखिलीजियोव्रजघरसोंतें

॥दोहा॥ धरो भोग ब्रज घरनि कौ एक दृहै उी मोहि ॥ यह कथा यस
गिरिधरन की रामदास कहि सोहि ॥सोरठा॥ जे वै कही गोस्वा
मि सुनि विहसे वै सें करौ ॥ राज भोग नित देखि धरौ सकल सुख
मानि कैं ॥५४॥ चौपाई ॥ गाय न हेत खिरक वन वाए ॥ कुंउ गुला
लउ गर मधि छाए ॥ ग्वाल करे चारौं ब्रजवासी ॥ राखैं गाय सुखे
न सुरासी ॥ कुंभनदास सुवन इक ग्वाला ॥ कृसदास है नाम कृ
पाला ॥ दूसर गोपीनाथदास पन ॥ तीसर ग्वाल गुपाल नाथ
धन ॥ चौथो गंगा ग्वाल सुजाना ॥ चारौं की नैं ग्वाल प्रमाना ॥ चा
रौं जाय चरावन गैयां ॥ रहैं सदा चारौं रज छैयां ॥ इक दिन प्याऊ
छाक विहरहीं ॥ श्रीजी खेलत हू ते सुत रहीं ॥ ग्वाल मंडली मध्य ।
विराजैं ॥ गाय ग्वाल सव सुख सों छाजे ॥दोहा॥ गोपीनाथ गुग्वाल

श्री
वा
२७

तब कही नाथ सों बात ॥ श्री गोस्वामि कृपाल तें लडुआ लीने त-
स्वात ॥ सोरठा ॥ ह मै लाउ न हिं देत देव दमन लडुआ कब ड़ ॥ ता
तें हम कूं हेत लायो कर भयातु ही ॥ ७७ ॥ चौपाई ॥ काल्हि लाउ गो
तुम हित भया ॥ दूसर दिन हि आठ डु रै या ॥ गोपीवल्लभ भोग सो
र तें ॥ दीनें ग्वालन बांट हाथ तें ॥ द्वै लडुआ दीय गोपिनाथ कों ॥ बा
की बांटे सब न साथ कों ॥ र कख्यो यो र क बांध हिं राख्यो ॥ औरन सब न
नें मुख में ना रेख्यो ॥ सांझ समय सब घर न सिधाए ॥ करनदं उोत्तप्र
भुन पै आए ॥ वाही समय आय भीतरी या ॥ करन लगे लडुअन की
चरीया ॥ नाथ आठ लडुआ न हिं पाए ॥ गोपीवल्लभ भाग सराए ॥
गोपीनाथ दिखायो लडुआ ॥ कह्यो तबें यह ना हिन लडुआ ॥ दो

ला॥ है ओ ही लडुग्रा न में सब न निहुस्यो वाहि॥ह्राथ जोरि बिनती करी गोपी नाथ सुजाहि॥ सोरठा॥ देव दमन हुग्रा ठलाये हम सब दैन को॥ख्वाये सब मिलि ग्वाल एक वांधला ये घरहिं॥ ५६॥ चौपाई॥ तब लडुग्रा प्रभु लीनों हाथा॥ तनक तनक सब दीनों साथा॥ तनक लियो निज मुख में मेल्यो॥ भाग सराहि नाथ संग खेल्यो॥ तबैं नेग वांधे सब हिनके॥ या को दीजो है नित पनके॥ सब नजा के जा विधि हो ई॥ता विधि नेग करेया प्रभु सोई॥ चरित लिखें गिरिधर नजहां ही॥श्री गिरिराज तरेहटी माही॥ खेत तरु ते चांवर के प्रभु के॥ लरिका द्वै रखवारी विभु के॥ रहैं सदा खेतन में सोऊ॥ करैं सेव प्रभु खेतन ओऊ॥ सोटी खेवेग या एक घर॥ दूसर रहो खेत हित तरु थर॥ दोहा॥ भरुअवार अायो नहीं दूसर रग्ग्राति

श्री
वा
२८

अकुलाय॥ भुजा हाथसा मेहकीयो बोल्यो भुखदुख पाय॥ सोरठा॥
चोरवा कोरष वार देवद मनहु आपु को॥ मो कों देऊ पठाय सेवे कों।
भैया तुम कउ॥ ७॥ चौपाई॥ सुनि पुकार आपु उठि धाए॥ वंटा में ल
ठआ हे पाए॥ जार दीये वा कों प्रभु करते॥ परम कृपालु नाथ उठि
घरते॥ भीतरीया जब देखन लागे॥ हे लठआ नहिं पार सभागे॥ त
ब आप समें चरचा करही॥ सुनत नाथ श्री मुख उच्चरही॥ दीने हेह
मलठआ दोऊ॥ करै खेत रखवारी सोऊ॥ सुनि गोस्वामि बुलायो वा
ही॥ छोरा हरजी नाम हि जाही॥ राख्या प्रभु की सेवा माही॥ वा को पो
खर भई तहां ही॥ हरजी पोषर नाम सुहाई॥ पानी पीवे नित जहं
गाई॥ दोहा॥ एक दिना को चरित इक श्री गोवर्द्धन नाथ॥ एक दहे
डी दही की राज भोग के साथ॥ सोरठा॥ आवत ही नित प्रात ब्रज

वासिन के घर न तें ॥ माला बोली नाथ पाछे आई नहि धरी ॥५८॥
चौपाई ॥ आइ अब बार धरी नहि ता सों ॥ पाछे भई अब नौ सर जा सों ॥ आ
पु विचारें हों मन माहीं ॥ दही आजु ब्रज जन नहि खाहीं ॥ एक कटो
री है मलई कर ॥ आपु पधारे ब्रजवासिन घर ॥ गाम वसे ली सो भागु
जरी ॥ गये तहां चलि घर उहि सुघरी ॥ वा सों मांग्यो दही जाय करि ॥
तब उन लई दही डीकर धरि ॥ वा तें काढि दही अति सुंदर ॥ दीनों प्र
भु कों हित करि मंदिर ॥ लीनों मारु कटोरी कर निज ॥ मन मान्यों षा
ए वा कों तज ॥ आपु पधारे स्याम ताक पै ॥ पानी जाय अरोगे वा पै ॥
दोहा ॥ ग्वाल मंडली हुती तहं गोपीनाथ गुपाल ॥ गोविंद स्वामी आ
दि है कुंभनदास सु बाल ॥ सोरठा ॥ मिले जाय तिन साथ खेलन कों
मन करयो प्रभु ॥ आसु मीच नी साथ खेलत ग्वालन सों छये ॥५९॥

श्री
वा
२८

॥चौपाई॥इततेंसंखसवदसुनिपाए॥प्रभुतहांतेंउठिमंदिरधा
ए॥गायसभीनिजखिरकपधारी॥आएसेवकसेवमझारी॥सब
सामानपरीउनदेषी॥खणकटोरीइकनहिंपेषी॥आपसमेंल
रिवेसबलागे॥इतनेहिंआइगुजरीआगे॥हतीविरोलीसोभासो
ऊ॥धरीकटोरीआगेओऊ॥श्रीगोस्वामिचरनकेआगे॥देवदम
नआएमोभीगे॥दधिलेखायकटोरीउरी॥सोमेलाईहोंपगधा
री॥यहसुनिआपुवहुतपछिताए॥हमनहिंधरेपाजायप्रभुषा
ए॥दोहा॥प्रभुनअरोगेविनरहेहमनधरीउहिवार॥तातेंगिरि
धरप्रेमसोंआपुगयेपगधार॥सोरठा॥तातेंवेगमगायधरेंदह
ड़ीभागमें॥औरहुचरितसुभायकहोंनाथगिरिधरणको॥६०॥
चौपाई॥एकदिनागोविंदकुंडवनमें॥ठाढेहुतेआपुतेंघनमें॥

कोऊ एक ब्रजवासिनि घर तें ॥ जात हुती लै छाक जु कर तें ॥ दृष्टि
भात सानें निज सुत कौं ॥ चलत चलत आवत भई तित कौं ॥ वा पै
मांगे पो जाय आपुनें ॥ हमहू कौं दै जानि पाहुनें ॥ हंसि वोली लाल
न सैं माई ॥ लेहु आपु हौं दैहुं कराई ॥ वासन आपु लिआवौ घर तें
दैहौं आपुन हित चित करतें ॥ तबै आय वासन निज लीनों ॥ रू
पै कौ हो तामें दीनों ॥ लियें हाथ निज मंदिर आए ॥ खाय दुपैहु
री मैं तरु छाए ॥ जब उत्थापन भयो नाथ कौं ॥ देखे वासन सन्या
भात कौ ॥ दोहा ॥ तब उन मिलि पूछ्यो सभी पात्तर मांजाजाय ॥
सानें या सखडी सो यह लीनाहि न मांज्यां आय ॥ सोरठा ॥ हम हू सब
ही मांजि धरे पात्र सब नाथ के ॥ पाछें नाहि न जानि कैसें कवन वि
धि प्रभु चरित ॥ ८१ ॥ चौपाई ॥ पूछ्यो श्री गोस्वामि नाथ सौं ॥ यह ली

श्री
वा
३०

लाप्रभुकवनभांतिसें॥ तवहंसिकहीनाथमुखमगरी॥ पैंठोकी
लछ्याही गुजरी॥ तासें लीनें भातमांगिकें॥ खायामंदिरवैठि॥
आनिकें॥ अवयाकों फिरिमांजिधरावो॥ तवमननमें गोस्वामि
सुधावो॥ ग्रीषमरितुहैप्रभुकोयातें॥ दहीभातप्रियलागेंजातें
तातें अवनितदहीभातकों॥ राजभोगमधिधरोनाथकों॥ सव॥
भोगनकेवीचधनेगा॥ जेमेंरितुनमांऊप्रियवेगा॥ याविधिसों॥
सेवनमनठानी॥ करेंसदाप्रभुइछामानी॥ दोहा॥ एकदिनाआ
यसकरीग्वालगुपालहिंजाय॥ कुंउअपसरायपैप्रभुश्रीगोस्वामि
नआय॥ सोरठा॥ हमरेमुखतूधायदहीभातमाकोंकरें॥ द्याकव
नावेंलायभूषलगीहमकोअवी॥ ३४॥ चोपाई॥ तुमजाआहमर
होविराजें॥ स्यामछाककेतरहीछाजें॥ तवेंआयधायोगोपाला

कहीजयाश्रीमुखनंदलाला॥सुनतगुसांईजूततकाला॥करीसि
द्धसामानउताला॥लेकरधरितवचलेगुसांई॥स्यामठाकततर.
जेहंप्रभुआंई॥तहांविराजेदोउभैया॥श्रीबलदेवनाथगिरिरैया
सखामंडलीमध्यविराजे॥खासहिंछाकप्रभुसबसुखछाजे॥यहसु
वलीलाअनुभवकरिकैं॥आयविराजेसुखउरधरिकैं॥निजबैठ
कमेंआपुगुसांई॥गिरिधरलीलाकेसुखमांई॥दोहा॥ऐसेसुख
अनुभवकरततरहेकछुकहीकाल॥पाछेश्रीगोस्वामिजूसौंपेगि
रिधरलाल॥सोरठा॥श्रीगिरिधरजीछोडिआपुपधारेनिजप्रभ
गयेदेसगुजरातजनपावनकेहेतुसौं॥६३॥चौपाई॥करततभये
श्रीगिरिधरसेवा॥कछुककालबीत्याजबदेवा॥इकदिनश्रीगि
रिधरसौंबोले॥देखौतुमरोगरहसुकलोले॥चलौमाऊमथुरामें

श्री
वा
३१

तुमसंग॥ खेलों वकु वेटि नमें वकुरंग॥ सुनि आयस प्रभु सिर धरि
लीनी॥ तव रथ गछन साज कों दीनी॥ जव रथ सिद्ध भई प्रभु केरी॥
करी आय विनती कर जोरी॥ सिला दूं ओती पै रथ आयो॥ चलो नाथ
मधुरा सुख भायो॥ तव हंसि वोले कांध लेतुम॥ वैठारो रथमांऊ
जाय हम॥ सुनि हिं उठाये कांध नाथ॥ वैठारे रथ मां रुसु हाथ
॥दोहा॥ मध्य विराजे आपु प्रभु श्री गिरिधर रथ हांकि॥ चले तहां
तें मधुपुरी आए सुख मग ठांकि॥ सोरठा॥ फागुन वदि गुरुवार॥
सोलहसो तेई संवत॥ सत मि पाट विराजि प्रगट सवन हो घरन में॥
॥६४॥ चौपाई॥ जादिन श्री गोस्वामि सदन में॥ आय विराजे नाथ सव
न में॥ तादिन श्री गिरिधर गोस्वामी॥ भेटकर्यो सरब समगिरिस्वा
मी॥ एक पई दनी आपु पहिरिकें॥ वछू वेटि सव सांउ सु धरिकें॥ द्र

व्यादिक भषन पट नाना ॥ आदि तु रग रथ पात्र सु या ना ॥ स वही
करे नाथ पट भेटी ॥ नथ रुकरा रवोक मलावे टी ॥ घर जोऊ ती समा
न सु हाई ॥ भेट करी स व गिरिधर राई ॥ त वे नाथ वहुन थ सु धि की
नी ॥ आयस करि श्री मुख वहु लीनी ॥ अंगीका रु करी प्रभु से वा ॥ ल ल
ण अंगी कार सु ए वा ॥ दोहा ॥ श्री गोस्वामि हु पाल के स दन विराजे
आय ॥ स व वा ल क मिलि होरि को खेल रच्यो करि भाय ॥ सोरठा ॥
त वै वु लाई नाथ आवो वेटी वहु स व ॥ पा छे हम ऊ खिलाउ मि लि
कैं होरी स कल तुम ॥ ६७ ॥ चौपाई ॥ र करु क होरी होय खिल वैं ॥ जे
सी क रै जा हि मन भा वैं ॥ अ तर गुलाल अवीर धराई ॥ चोवा चंदन
के सर लाई ॥ चोवा की चोली पहिराई ॥ की यो सिंगार मोहनी भाई
रंग गुलाल भयो ऊ र आई ॥ नाहि न छवि क छु वरनी जाई ॥ गुल

चो

देवैं फगुआ मांगे ॥ मुरली लै तहि नाय सुपांगे ॥ फगुआ देत अमि
त विधि होरी ॥ भयी नाथ के रंग सब बोरी ॥ मन माने को फगुआ लीनें
जे सो जा को रुच्यो सु दीनें ॥ या विधि होरी खेल मचायो ॥ सब गो
स्वामिनि सुख मिलि पायो ॥ दोहा ॥ भयो परस्पर सुख महा कि
हि को कहै बनाय ॥ सो सुख अति दुर्लभ सुरन या ते कह्यो न जा
य ॥ सोरठा ॥ सुन्यो सकल गोस्वामि समाचार गिरिधरण के ॥
तब हि पधारे आप सुजानि तवे आय सकी ये ॥ ६६ ॥ चौपाई ॥ श्री गि
रिधर सों कह्यो बुलाई ॥ मो को निज मंदिर पधराई ॥ आए श्री गो
स्वामि जु हां ते ॥ ता तें मैंहू चलों इहां ते ॥ जब देखन हि मंदिर सो
कों ॥ होइ दुखित मन में अति ता को ॥ उन के हृदय विराजे देवा ॥
महा प्रभुन निज सुख मम सेवा ॥ आजु हिं चलो विलंब न होई ॥

सजो समान आपुतें सोई ॥ गोपीवल्लभ भोग अरोगें ॥ पाछें रथ
में बैठि चले गों ॥ ऐसें करी नाथ गिरिधरराई ॥ चले हां कि रथ वे
गि सभाई ॥ राजभोग अरु सैनभोग दोऊ ॥ इकठे बैठि मंदिर म
धि सोऊ ॥ चारि घडी दिन सों प्रभु आए ॥ मिलाई ओती पें रथ छाए ॥
॥ दोहा ॥ चढिकां घश्री नाथजी गिरिधरप्रभु के भाय ॥ आय विराजे
कूदि कें चरन चौकी याधाय ॥ सोरठा ॥ अति हि अलौकिक जानि
लीला श्री गिरिधरण की ॥ करी वे उत्सव आय श्री गिरिधर गोस्वा
मिजू ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ इतीन्रसिंह चतुर्दसि वादिन ॥ प्रभु नें उत्सव
कीनों वादिन ॥ राजभोग पुनि सैनभोग हूं ॥ कीनें इकठे प्रभुनि
जोगहूं ॥ तातें याही रीति सब न घर ॥ आंवें भोग दोऊ ईकठे पर ॥ दू
सरदिन पूरणपो ही होई ॥ श्री गोस्वामि पधारे सोई ॥ प्रभु नें आय सव मे

श्री
वा
३३

माचारहू॥ बोलेआयसकरिउदारहू॥ मत्प्रभुनजवपाटविठाए
तवतेंदरसननगिरिपैपाए॥ करिदंडौतपधारेमंदिर॥ परस्निकपो
लकहेवचसुंदर॥ यहअभिलाषप्रभुनकेमनकी॥ पूरनकरीना
थनिजपनकी॥ दोहा॥ मथुराकोंकारणकवनवावानिजपगधा
रि॥ कहौनाथसवतुमवचनपूछैंनिजचितभारि॥ सोरठा॥ हसि
बोलेप्रभुआपुवकुवेदिनकोंदेखिवे॥ गयोआपुकेधामहूंसपरस
परनाथदोऊ॥ ६८॥ चौपाई॥ एकदिनांकोचरितवषानों॥ स्यामप्र
कतरखेलिप्रमानों॥ गोविंदस्वामीसाथयहूतेजव॥ संखनादभयो
मंदिरमैंतव॥ आयपधारेतुरतसाथभगि॥ रहीकवाइअदककेकु
तहूलगि॥ आगसमयगोस्वामिपधारे॥ दरसनकीयेकवारतिहा
रे॥ मनमेंखेदकरयोकारणकिहि॥ आजुकवारफटीदरसीजि

हि॥ इतनें हिं गोविंदस्वामी आए॥ इक कवार नाथदरसाए॥ और कही
सब बात सुनाई॥ लरिका तुमरो चपल महाई॥ लैव हू इक कवार लगा
ए॥ निज कर श्री गोस्वामि धराए॥ दोहा॥ तब श्री मुख आयस कीयो।
श्री गोस्वामि बुलाय॥ रामदास चौहाण कों सुनि यो मन नहिं लगा।
य॥ सोरठा॥ सखनाद जब होय थोरि सिविरि यां ठहर कें॥ टेरा खे
लो जाय प्रभु श्रम पाव तुरत तें॥ ६५॥ चौपाई॥ एक समय वागा।
करवाए॥ स्याम रंग को हो मन भाए॥ कपरा थ्याराऊ तो वही तब॥ वा
गा भयो तन कछोटो जब॥ जब हिं धरायो वागा प्रभु नें॥ वाग्र तु मा।
न धर्यो वपु विभु नें॥ तब ही भए अनंद गुसांई॥ प्रभु सेवा मानी नि
ज भाई॥ श्री गिरिधर श्री गोकुलनाथा॥ भए प्रसन्न मगन मन सा।
था॥ पठै पास लोक प्रभु की द्विका॥ समुझैया ना हि सु लिख्यो न फ

श्री
वा
३४

विका॥जववरुमिलेजयावतसोऊ॥लिखेंवातवैमेंभावसुगोऊ
कंचुकस्यामनिहारैयोंगोघो॥प्रभुमयवासमनिजमतिसोघो॥
दोहा॥वेटीएकगुसांलीयारूपमंजरीनाम॥वासोंचोसरखेल
वेनायगयेतिंहिधाम॥सोरठा॥नंददासहेसाथवीनवजावत
अतिवडी॥रहेंगापुतहंठामचोसरखेलतवीनधुनि॥७०॥चौ
पाई॥नंददासकीसिष्यहुतीवहु॥गानवीनपरवीनहुतीउहु॥नंद
दासजूवाहिप्रमानी॥रूपमंजरीग्रंथवषानी॥श्रीगिरिधरनला
लमनभाए॥अपुनीजानितहांनिसिछाए॥तहांविराजेरेनविहा
नी॥भोरभएमंदिरनिजमानी॥जवमंगलआरतिकोंआए॥श्रीगो
स्वामिलालदृगपाए॥तवपूछेनिजनाथनाथनें॥कहांवसनिसि
लालयतिनें॥हंसिवोलेसववातसुनाए॥रूपमंजरीचोसरघा

ए॥ तहां वसे निसि नें दृढ़ दास सही॥ रंग रह्यौ चौसर सु बीन सही॥ दोहा॥
हंसि बोले गोस्वामि जू लौकिक लोग न मेल॥ खेलो ब्रज भक्तन सदा
चौसर मंदिर खेल॥ सोरठा॥ यह कहि इनाहिन बात्त आपु पधारो अं
नत कऊं॥ आय सकरि निज दास चौसर प्रभु कें नित धरो॥ ७१॥ चौ
पाई॥ या विधि चौसर खेल धराई॥ चरित्त कहौं प्रभु को सुखदाई॥
एक दिनां को चरित सुनाऊं॥ सत्तरंज खेल प्रभुन को गाऊं॥ अकब
र साह कि वेगम होई॥ अलीखान की वेटी सोई॥ ता जनाम हो जग
त ताहि को॥ हती भगवदी प्रेम नाथ को॥ सेवक श्री गोस्वामी जू की
कहीं धमारि गाय हैं ताकी॥ निरतत आवत जात ताज को॥ प्रभु गा
वत होरी गीत भाव को॥ यह पद वाको मैं हूं रास्यो॥ आगे कहौं चरि
त हूं भाख्यो॥ जां यह आगरा खेलन वासें॥ सत्तरंज खेल साथ प्रभु जा

सों॥ सो एक दिन हू जानि गुसांई॥ ता दिन सों निज मंदिर मांई॥ कही
नाथ सों श्री गोस्वामी॥ सब लों ब्रजभक्तन सों स्वामी॥ अवर सुनों अव
चरित आपु को॥ लीला मधि राख्या जुताज को॥ एक दिन आय तरै·
टी मांही॥ कीये आय उरा निज़ मांही॥ दोहा॥ आई गिरिधर दरस
हित पति ही संग लिवाइ॥ वा कों दरसन प्रेम तें दीये नाथ ओ ही भा
इ॥ सोरठा॥ दई सैन निज नाथ वा की आरत जानि कें॥ अति सया।
प्रेम उछाह वढी आय तिहिं मिलन की॥ ७४॥ चौपाई॥ मिलवे की वा
के मन आई॥ बोली मुख सों निज हित भाई॥ अव हों मिलों जाय गिरिध
र सों॥ यह सुनि वात सखी उन मुख सों॥ राय विंदावन वैठी होई॥ सखे·
ले सत तरज वा सों जोई॥ वा ने लीनी पकरि हाथ सों॥ ना हिन दीनी·
भेट नाथ सों॥ भई अनो सरग हि कें वा कों॥ आनी गिरि ति तर सुधि^ नहि

जाकों॥भईआतहीप्रानविहीनी॥गिरिधरलीलामैंतिहिलीनी॥
तवैंभयोसवदिनभयभारी॥चित्तवत्तसवैंनाथगिरिधारी॥काजा
नैंकाहककैंप्रतापी॥देसपतीतिहिंपतिसवथापी॥दोहा॥सुनी
वात्ततिहिनाथसवकहीसकलसोंभाय॥वस्तुजहांकीतहंगयी
हमसोंकछुनवसाय॥सोरठा॥दईपठायसुआपुभवनआगरेको
नवहिं॥दिल्लीगयोसुभायदेसपतीअकवरतवहिं॥७७॥चौपाई
॥अवइकचरितसुनोप्रभुकेरा॥वस्याएकआगरास्वेरा॥कुसदा
सअधिकारीहोई॥वानेंदीनेंनाथमिलाई॥करीआपुश्रीगिरिधरपा
वन॥पतितउधारननामसुभावन॥चरितनाथकेअमितअपारा
सेसनागनहिंवरनैंजारा॥एककहौंमेंचरितसुठारी॥विलछुआके
सामंहरकवारी॥रास्वीऊतीमहाप्रभुजवहीं॥मंदिरसिद्धकरायोत

वंही ॥ देखत ग्वाल मंडली जहंते ॥ सदा नाथ गिरिधरन सुतहंते ॥
श्री गोकुलपति करत सिंगारा ॥ आई धूप तहां उहि वारा ॥ ग्रीषम
रितु ही प्रभुन सुहाई ॥ एक तिवारी आउ बनाई ॥ दोहा ॥ वा कों आ
पु बनाय के प्रभु श्री गोकुलनाथ ॥ करि दंडवत गोकुल गए सब प
रिकर के साथ ॥ सोरठा ॥ आपु श्री गिरिधरनाथ भंगी मोहना सों
कहे ॥ कहियो मो मुखबात धाय श्री गोकुलनाथ सों ॥ ७४ ॥ चौपा
ई ॥ हाथ जोरि कर विनय नाथ सों ॥ या हित अटारी ठाकुर आपु सों ॥ ह
म कों दीसत नाहि विलछुआ ॥ आउ पड़ी मोकों जु दीखुआ ॥ सुनि ब
ड़धा यों गह्यो नाथ पे ॥ पहुंच्यो जाय अडींग गाम पे ॥ हाथ जोरि
कें विनय बषानी ॥ कहे नाथ इक बात महानी ॥ मुख छोटो मो कों
नहि छाजै ॥ आपु त्रिलोकनाथ सब साजै ॥ मो कों श्री गिरिधर ॥

नपठायौ ॥ राघजोरिआयसप्रभुलायौ ॥ श्रीमुखकह्योआपुसुन
लीजै ॥ वाहितिवारीठायसुदीजै ॥ वातेविलछणआदीसतनोह्दी ॥ ग्वा
लमंडलीमोमनमांह्दी ॥ दोहा ॥ यहआयसमोकोंदईपठैजोआपु
पदपास ॥ तातेंह्वोंउरपतप्रभूनाथरूपह्रोजास ॥ सोरठा ॥ सु
निह्रसिएंछीवातजाननतमेरोनामप्रभु ॥ गदगदकंठसुआ
पुवारवारएंछतभए ॥ ७५ ॥ चौपाई ॥ आपुपधारेतह्रंतेपाछे ॥
श्रीगिरिधरजह्रंकाछिनिकाछे ॥ आयनाथपदद्वंदवतकीनी ॥ कु
रसामानभोगकीलीनी ॥ आगधरीप्रभुछमाकराए ॥ आयसद्रि
ष्टटारीठाए ॥ विनयसुनीगोकुलपतिभाई ॥ सुनिप्रसन्नभइगि
रिधरराई ॥ चरित्तएकश्रीगिरिधरदेवा ॥ करततश्रीगिरिधरप्रभु
कीसेवा ॥ सेवकरइनकोह्तोसुप्रेमी ॥ सेवाकीर्तनकोवह्रनेमी ॥

श्री
वा
७

कल्याणनामजोसीहोसोई॥कीर्तनकरतोहतोजुओई॥नितप्र
तिकीर्तनसेवाकरतो॥सदाप्रेमसोंजनमग्नुधरतो॥एकदिना
श्रीगिरिधरराई॥अरुगावतवीऊमनभाई॥समयवाहियहकी
र्तनसेवा॥यहपदगावतऊतोसुभवा॥दोहा॥मेरेतोएप्रानहो
रीसखिदुखकेहरन॥कान्हध्यानकेआनयहपदगायोसुखक
रन॥सोरठा॥करतभयोवीचारयहपदगावतहतोवह॥हसत
नाथउहिबारअष्टछापगावतथ्यकें॥७६॥चौपाई॥अबतोनाहि
नहसतनबोलत॥याकोमनसंदेहसुबोलत॥अंतरजामीना
थप्रभुतव॥खातपानहप्रभुसुखमेंजब॥बोलतहंसिहंसिगि
रिधरप्रभुसों॥आछोगावतसेवकसबसों॥प्रभुसुसिकाननि
रषिकल्याना॥मान्योअपुनेंभागमहाना॥श्रीगिरिधरजू

एके प्रभु सों॥ नाथ घटा यहुव रखे को सों॥ पाछें कारण जान्यों ति
नको॥ कहीं श्री गोकुलपति सों मनि कैं॥ श्रीजी इक रससदा विराजे
आदि मध्य अवसान हि राजे॥ श्रीमद् गोस्वामिन के आगे॥ पुष्टि सृ
ष्टि ही जीव सभागे॥ दोहा॥ तवसब सों संभाषण करत भए हंसि वा
त॥ सब संग गिरिधर खेलते पुष्टि सृष्टि के जात॥ ७७॥ सोरठा॥ मि
श्रित सृष्टि निहारि सेव सदा सब की गहे॥ बोलत सृष्टि विचारि
अब यह दूर रह्यो काल प्रभु॥ ७७॥ चोपाई॥ एसें हि करत भए नित
सेवा॥ एक दिनां निज इच्छा देवा॥ श्रीमथुरेश प्रभु की मानी॥ भए
लीन श्रीगिरिधर जानी॥ सेवा करत नाथ मुख देखाल्यो॥ श्रीगिरि
धर सदेह हि मेल्यो॥ जब हि पधारे गोकुल राया॥ माला रक्षिण
हेत सुभाया॥ काश्मीर प्रभु हूते विराजे॥ श्रीगिरिधर सेवा सुख

श्री साजे॥करतहतेश्रंगारनाथका॥श्रीदामोदरपासआपुका॥
वा करैंप्रचाररागिसेवाघरकी॥रहेसदासेवनसुखकरकी॥प्रभुनें
३८ लीनीतवैंउदासी॥श्रीगिरिधरजूसुखमधिवासी॥दोहा॥उ
दासीनदेखेप्रभूश्रीमथुरेशकृपाल॥श्रीदामोदरसोंकहीत
जोमोंकोतुमलाल॥सोरठा॥लौकिकसेवासाजिआयपधारेभ
वनमें॥तुमहूंकरोसुराजवैठआपुगादीसभी॥७८॥चौपाई॥सा
दीआयविराजेतवहीं॥करीवैठिचोकसिसुजवहीं॥तीनलाखह
भेटरूपैया॥सोभंडारीधरेदिपैया॥ताकोपूछैनहिंउनभाषे
श्रीजीकहेनाथजिहिंराखे॥जानअजानरहतकेनीचे॥धरेभंडा
रीभूकेवीचे॥जवयहआयसश्रीमुखदीनी॥तवहीनाथजाय
धनलीनी॥ऐसेदैवीधनप्रभुराखें॥अंगीकारसकलकोभा

षें॥ श्रीदामोदरसेवासाजी॥ करैं सदासेवनमनराजी॥ सुखस
वरहैं नाथपदसेवा॥ देवअदेवसकलनरदेवा॥ दोहा॥ श्रीमुर
लीधरप्रभुकह्यौ एककदारिसुठारि॥ हमरेबांधनकीहुतीधरोना
थगिरिधारि॥ सोरठा॥ कहीटिकैंतनआयसुनि प्रभुआयससहैया
करी॥ दसमीविजयधराउवादिनश्रीगिरिधरधरैं॥ ३५॥ चौपा
ई॥ दसमीविजयसिंगारधराए॥ लायकटारीप्रभुपहिराए॥ जैसा
रूमयौसिंगारसुहावन॥ प्रभुनेंमान्यौहितचितभावन॥ एकदिं
नांकोचरितसुहायो॥ रुगराभैयाबंधुनपायौ॥ श्रीदामोदरसु
तश्रीराया॥ नितप्रतिरुगराइननहिंभाया॥ तातेंआपुपधारे।
गिरितें॥ गए आगराप्रभुनसुवलतें॥ नरपतिसोंभेटप्रभुजाई
कह्योसकलजोहुतीसदाई॥ सुनिनरपतिकहुनाहिनमाष्यौ॥॥

श्री
वा
३८

प्रभुनेंमान्यारूनकीआग्या॥यहमानीमनबलप्रभुकेरा॥आय
विराजेप्रभुनेंउरा॥दोहा॥मनमेंचिंतायहभईनरपतिकैंउह
औरा॥हमरोबलप्रभुआननहिएकआपुकीठौर॥सोरठा॥चिंता
यहमनमांहिप्रगटनाथतबहीभए॥श्रीमुखकहीसुनायलाः
लघरीनिजकरलिए॥८०॥चौपाई॥श्रीगिरिधरणलालतहआः
जे॥जहांश्रीविठ्ठलरायविराजे॥श्रीकरदयासीसकेऊपर॥समा
धानकीनेंमुखह्वकर॥जबश्रीविठ्ठलनाथगुसांई॥वालकसाः
तोंमापैलाई॥जासोंभावैसेवकरावो॥समाधानसबसाजधराः
वो॥तबमैंश्रीगिरिधरभुजपकरी॥एहीकरैंसेवमोसगरी॥अ
वरसभनकीसेवामानों॥उत्सवदिनसबइनहिंप्रधानों॥सा
तदिनांउतसबकेकहाई॥तीनसत्तकादिनसबमनजोई॥मोरउठा

वनवलहैउनमें॥ नाहिनऔरनकेवलतनुमें॥ दोहा॥ मोकों
आपुउठायकें खिलाइंऔतीजाय॥ पधरावैं निजकरनतें सदासु-
खदमनचाय॥ सोरठा॥ श्रीगोस्वामिकृपालआपुपधारेव्रजकूं
वऊं॥ आएघौंडिअउेलसबबालकनिजसाथहीं॥ ॥ चौपाई॥ श्री
नवनीतप्रियकीसंपुट॥ बालकदैहंकोधलंपुट॥ इकइकतेंन
हिजानउठाई॥ तातेंसबमिलिकरैसहाई॥ एइकलेहीनिजक
रधारे॥ तातेंमेंश्रीगिरिधरपारे॥ याविधिप्रभुसवआयसुकरि
कैं॥ अंतरहितभएआपुउचरिकैं॥ हसरदिनभएआपुपधारे॥
जायनाथनरपतिहिंनिहारे॥ जाप्रमाणश्रीगिरिधरनाथा॥॥
आयसदीनीनरपतिनाथा॥ लिखिदीनीसववाहीक्रमसें॥ हत्ती
जथापूरवहीप्रनसें॥ आपुपधारेउहितेंगिरिकें॥ ऊगरामिटे

श्री
वा
४०

सबनकेउरकों॥ दोहा॥ आयविराजे प्रभूतब सेवें गिरिधरनाथ॥
करैंसिंगारसुहाव नोधरैंटिपारोहाथ॥ सोरठा॥ श्रीमदविठ्ठल
रायअद्भुतछविप्रगटैतवहि॥ निरषिसकलहरषांयसेवक
जनश्रीनाथके॥ ८२॥ चौपाई॥ जबदरपनलैनाथदिखावैं॥ तिर
षिश्रीगिरिधरअतिसुखपावैं॥ एकमहीनामेंवऊवारी॥ धरैंटि
पारोप्रभुनसुधारी॥ याविधिकरततरहैंसिंगारा॥ प्रभुनमोद
सेवकसुखभारा॥ करीदउवतप्रभुननिहारे॥ एकसमयवेउत
हिरपधारे॥ श्रीगोस्वामिनबालकदोऊ॥ करैंनाथकीसेवनसो
सोऊ॥ उनहिंविचारयोधरैंटिपारा॥ प्रभुनहिंमानीउहसिंगारा
जवअैहैंश्रीविठ्ठलरावा॥ धरैंटिपारोमानोभावा॥ औरसिंगा
रसभीतुमधरिहौ॥ सोसबमेंसुखसोंनितकरिहौ॥ दोहा॥ जव

आए श्री विठ्ठलराय प्रभुन के पास॥ धरयो टिपारो नाथ तब उनहीं
कर सुख भास॥ सोरठा॥ ऐसे प्रभु कृपाल पल्लक रैं अपु नाथ कें॥ न
हिं इन सो कोऊ घाल श्री गिरिवरधर नाथ बिन॥ ८३॥ चोपाई॥ एक
समय को चरित सुनाऊं॥ परम प्रेम धन जासों पाऊं॥ इनके सुत
श्री गिरिधर हो ही॥ कबऊं लहोर पधारे सो ही॥ सत्रह दिन है ओल
मां रजब॥ कही जाय श्री मुख सों उन तब॥ जब तुम मो कों आय
खिलावो॥ खेलों तब हिं बसंत सुहावो॥ एक हि आवे सेवक तुम
को॥ करै भेट धन लाख अपुको॥ उहि ले आप पधारो इहतें॥ आ
य पधारो निज गृह चहतें॥ यह आयस प्रभु कही उ हां ही॥ आपु
पधारे निज गृह मांही॥ दूसर दिन सेवक वह आयो॥ लाख रुपै
या भेट चढायो॥ दोहा॥ वाही दिन तह तें चले भेट लई सब साथ
चलत चलत आए प्रभु दरसे गिरिधर नाथ॥ सोरठा॥ दिन बारह

श्री
वी
५२

मेंधायआपुपधारेप्रभुचरन॥रचीबसंतवनायउोलझुलाए
नायकें॥८४॥चौपाई॥ऐसेश्रीगिरिधरकीकाना॥पलकरेंप्र
भुअपुनोंजाना॥श्रीगोस्वामिनकानमानिकें॥वल्लभकुलकी
सेवजानिकें॥अभिलाषाअपुनेमनकरिहें॥सदासर्वदाना
थमुसरिहें॥मुख्यसेवटीकेतनजानी॥आपुकरावेंइच्छामा
नी॥एसेंइएकआगलीवाता॥कहोंनाथकीनिजमुखजाता
जवश्रीगोकुलनाथपधारे॥काशमीरमालाछितकारे॥पाछे
गयोफागजवहोई॥उनकेमनमेंरहीजुसोई॥हमनाछिन
प्रभुफागखिलाए॥करिउछिकाजआपुजवआए॥दोहा॥ग्वा
लएककोदूधघरतासोंश्रीमुखजाय॥आयसकहीवुलायकें
जावैाउछितुमधाय॥सोरठा॥मोमुखकहोंप्रभुनायश्रीवल्लभ

गोकुलपतिहिं॥ मोकों खेल खिलाउ अब तुम फागुनमास की ॥८८॥ चोपाई॥ मुनि वहुगयौ नाथ पें धाई॥ श्री मुख आयस फागु न आई॥ प्रभु नें मानी आयस सिर धरि॥ तबै समान फागु की सिधि करि॥ चैत्र कृष्ण एकादसि आई॥ श्री गिरिधर कों फाग खिलाई॥ फूल गुलाब मंउली करिकें॥ लता माधुरी दुहुं दिसि धरिकें॥ कुंजकुटीर चि फागु खिलाए॥ काछिनि मुकुट सिंगार धराए यह धमार गाई जु सुहावन॥ सदा वसंत रहित विंदावन॥ लता लता द्रुम आदि सुहाई॥ परम मनोहर छवि प्रभु पाई॥ ऐसे श्रीवल्लभकुलसेवा॥ मानत हित श्री गिरिधर देवा॥ दोहा॥ एक समय कों चरित अब श्री लक्ष्मण महाराज॥ वंसिंहु श्री रघुनाथ के। गान कला सिर ताज॥ सोरठा॥ भए अनेंनो समर आपु संध्या कों गाव

श्री
वा
४२

तरहैं ॥ हरषि आयै पौरदुआर चारि घरी लौं प्रभु सदा ॥ ८६ ॥ चौपाई ॥
धींधी को पद वा दिन गायो ॥ फागुन मास धमार सुनायो ॥ औरु सेर
करत आपु सुख पाए ॥ करत जथारुचि गान सुभाए ॥ एक दिना
श्री गोकुलनाथा ॥ पूछ्यो सेवक सन सुखसाथा ॥ याविधि अंग को
कीर्तन गाई ॥ तब रककहौ श्री लछमण राई ॥ तब वै आपु सुख नां-
ही कीनी ॥ प्रभु सोवत में सुख कीही नी ॥ श्री मुख सों सपने के मां-
ही ॥ उन कों कह्यो तुम कीनौ नाहीं ॥ श्री लछमण गावत हौं सुनि कै
सदा मोद सों निज कर पनिहौं ॥ तातें तुमहूं कों बुलाई ॥ गावै सु-
ख सों नित प्रति आई ॥ दोहा ॥ प्रातहिं बोलपठाय कै कह्यो श्री गोकु-
लनाथ ॥ श्री लछमण जू सों तत वै गावौ निज सुखसाथ ॥ सोरठा ॥ ह-
म कों श्री मुख आय कही गान की गिरिधरण ॥ तातें तुम सुखसा-

थकरौसेवनिजनाथको ॥८७॥ चौपाई ॥ याविधिश्रीवल्लभकुलसेव
न ॥ मानेंसुखकरनाथसदेवन ॥ एकसमयकीकहौंवषानी ॥ श्रीगो
स्वामिपधारेजानी ॥ गएद्वारिकापावनमारग ॥ देसमिवाउसक
लकेपारग ॥ तहांएकथलरमणिकदेखा ॥ श्रीगिरिधरकीथितित
जहंपेखा ॥ चाचाजीहरिवंशबुलाई ॥ आयसकीयेनाथमनभाई
याथलकवहुंकिआयविराजे ॥ श्रीगिरिधरणलालसुखसाजे ॥
हमरेंआगेनाहिनगिरिको ॥ छोउपाछेकवहुंकिघरको ॥ तहां
विराजेद्वैदिनमनसों ॥ प्रभुकोआश्रममानिसवनसों ॥ दोहा ॥ उ
दयसिंहराणांहुते देसपतीसुनिपाय ॥ प्रभूपधारेजानिकेंआ
योदरसनभाय ॥ सोरठा ॥ करीदंडवतआयएकगामसोंमोहरख
धरि ॥ दीयोप्रसादसुहाथवस्त्रनसहितसुसानिकें ॥ ८८ ॥ चौपाई

श्री
वा
४३

भयोप्रसन्नमनमांही॥प्रभुकोंनिरष्योमनतनुमांही॥नाथजो
रिकैंविनयवषानी॥पावनकरयोनाथजनजानी॥प्रभुनेंकी
नोंपावनमोकों॥रहेनाथपावनघरउनकों॥चलिकैंकरोना
थघरपावन॥आपुपधारेतवहिंसुहावन॥आयविराजेमहि
लनमांही॥रानीसवदरसनहितआंही॥वाकीवेटीमीरांवारी
दरसनमुख्यनाथउठिधांई॥बहुहूतीतरुंसुतकीनारी॥अव
जेकुंवरतहंनामसुधारी॥वानेंब्रह्मसमर्पणलीनों॥प्रभुकोरूप
अलौकिकचीनों॥दोहा॥भइस्वरूपासक्तितवश्रीगोस्वामिकृपा
ल॥जवभएचलिवेद्वारिकामुरछितदईउहिकाल॥सोरठा॥
याविधिभइवहुवारजवैविचारेचलनप्रभु॥तवहंसिवोलेघाल
रहिनहुमारोनहिवनैं॥८८॥चौपाई॥श्रीमुखदयोवाहिवरदाना

तोकों नित प्रति दरस निधाना ॥ श्रीगिरिधरण दरस तोहि दैहें ॥
हमरे वरतें गिरि तजि ऐहें ॥ यह आग्या सकरि श्रीगोस्वामी ॥ गए द्वा
रिका अंतरजामी ॥ पाछें श्रीगिरिधरण नाथ नित ॥ गिरिवर तज
कें आवें वरहित ॥ खेलें चौपर उग्र वजकुंवर सों ॥ नित प्रति आवें
प्रेम प्रकरसों ॥ या विधि खेलत काल भयो जव ॥ इक दिन प्रभु सन
विनय करी तव ॥ आवत जात परिश्रम होई ॥ तातें प्रभु सों कहों जु
सोई ॥ देस मि वाउ विराजो नाथा ॥ नित प्रति दरसों सुख के साथा ॥
दोहा ॥ जोलों भूतल पे रहे श्रीमद विठ्ठलनाथ ॥ तोलों नहिं व्रजेश
कवहुं सदा गोवर्द्धन साथ ॥ सोरठा ॥ पाछें तें हों आय रहों जहां पे
महिल तुहि ॥ तहं मंदिर वनवाय रहुं आय वहु काल में ॥ ५० ॥ चौपा
ई ॥ कितिक जब वसु धरि दें कुल मांहीं ॥ मोहि पधरावें तव व्रज जाहीं ॥

क्रीडाकरिकैंगिरिवरभाई ॥ रहैंकालबहुब्रजमध्यजाई ॥ यहआ
यसुकरिगिरिवरआए ॥ याविधिआवतजातसिधाए ॥ कछुंकि
कालबहुतजबगयो ॥ बातआपुनीसुधिप्रभुभयो ॥ आपुविचार्यो
मनमेंवाउ ॥ जानैंहैकोईउरैंआउ ॥ महाप्रभुनमोहिपाटवि
ठारे ॥ श्रीगिरिराजमंदिरनिरधारे ॥ श्रीवल्लभकुलनांहिउठावें ॥
तातेंअपुनेंबलकछुघावें ॥ कोउकष्टसुरउठावेमोकों ॥ यहरुजी
यजानिकरोंउसोकों ॥ दोहा ॥ श्रीवल्लभमहाराजकोंसपनेंमांह
दिखाय ॥ चरित्रदिखायोआपुकोसकलजथाप्रतिभाय ॥ सोरठा ॥
भयौदरसनिसिआयश्रीगिरिवरकोंत्यागिकैं ॥ श्रीगिरिवरकेना
थदेसपधारेऔरकों ॥ ५१ ॥ चौपाई ॥ देखतभएआपुनिसिमाहीं ॥
सैनआरतीपाछेंजाहीं ॥ सेवकसबकीघरकोंगए ॥ रातिपहिर

कछुऊपुरछए॥एकमलेछग्रावतोसोंई॥उाठौसोंनितजाउतहो
ई॥जगमोहनग्रुरुकमलचौककों॥बारहवर्षसुठारसोंककों॥
याविधिउाठीसोंनितजारे॥कबहूनदेख्योकाहूसारे॥योगज
वलतेंग्रायग्रकासा॥वाहीक्रमतेंजावेभासा॥एकदिनांश्री
गिरिधरबोले॥भएप्रसन्ननाथसुकलोले॥ह्वैबीराकाढेवटा
तें॥दीनेबाकोंकहेघटातें॥ दोहा ॥दीयेग्रापुग्रायमसतबैंबावन
वर्षसुराज॥तोकोंदीनोंहमकुंग्रबएकहमारोकाज॥ सोरठा ॥
हमकोंदेहुउठाययागिरिवरकेसिखरतें॥नाहिनफिरितहू
ग्रावमंदिरछिपिदैगिरिसहीं॥ ६४ ॥ चौपाई ॥इहांग्रायमहिज
तवतिनेवेहो॥वाकेमधिनदिंग्रापुनजैहो॥दंउवतकरियेबा
हिरराहिकें॥यहसुनिगयोग्रागरेधेकें॥नामकुतोग्रारंगसा

श्री
वा
४५

हुताको॥ एकदिन एक हलकारा वाको॥ आयो श्रीजी द्वार पठायो
देसपती कोहुकम लिख्यायो॥ वानें आय कही मुख वाता॥ मोकों
पठयो है सुनि भ्राता॥ देसपती नें प्रभु के पांही॥ मोहि मिला वो
नाथ जहांही॥ सेवक एक लेसंग सिधायो॥ प्रभु पद हलकारा उ
हिं ल्यायो॥ करी दंडवत वानें आई॥ देसपती को हुकम सुनाई॥
दोहा॥ श्रीमद् विठ्ठलराय सुत वउ श्री गोविंद राय॥ भाई पांच हु श्री
रहे हुते वालपन भाय॥ सोरठा॥ हुते जु पांच हु वाल द् सदस वार
ह वषके॥ मिल्या आय उहिं काल श्रीमद् गोविंद राय सों॥ ५० ॥ चौ
पाई॥ करत तसेव अधिकार सु राषी॥ कही सु नाय देसपति भाषी॥
पठयो देसपती नें मोकों॥ सो हों देहु सुनाय आपुकों॥ उनकों
कम दास में लायो॥ प्रभु को टरस न आय सुपायो॥ मो पे करु

एन चितवन धारौ॥ तब कहौं उन मुख कह्यौ उचारौ॥ प्रभु नें कहीक
हौ तुम वाता॥ नाहिन तुम कों या में पाता॥ मो कों पठयो नरप
ति धीरा॥ कह्यौ जाय गोकुल फकीरा॥ करामात कछु मोहि दिखा
वौ॥ नातर गिरिवर तें उठि जावौ॥ यह सुनि कें हलकारा गयौ॥
प्रभु के चित में सोच नहि भयौ॥ दोहा॥ तब श्री गिरिधर नाथ सों आ
करी वेनती आय॥ करामात मांगी असुर देसपती मन भाय॥॥
सोरठा॥ कृपानाथ पद भाव या मारग में आपु की॥ करो जु आय
स आपु दिखरावें वा असुर कों॥ ५४॥ चौपाई॥ सुनि प्रभु नें उत्तर
न हि दीनौ॥ तब श्री गोविंदराय प्रवीनौ॥ भए मगन दुख चिंता
मांही॥ प्रभु आयस विन केऊ हू नाही॥ नाहि दिखावें तो नहिं
रहि ही॥ अब काहु करें विचार तजहु ही॥ श्री गिरिधारी जू अव

श्री
वा
४६

उभाई॥आपुपधारेलीलाजाई॥उनजपुरश्रीगिरिधरनाथा॥क
रतकृपाअतिसयहितसाथा॥उनकीकहोंआगलीबाता॥एक
दिनप्रभुकेमनहींप्रभाता॥परवानापाछिलेसाथा॥आपुपधा
रेदिल्लीनाथा॥परवानापरसहीउरावन॥नाहीकुसीदेसपतिपा
वन॥दोहा॥तवहिंपधारेआपुप्रभुहमकोंचिंतानांहिं॥जोपाछेते
होंयगेउनकेंजेसीमांहिं॥सोरठा॥हमवैठेकहुनांहिंआपुपधारे
प्रभुतहां॥जहांश्रीगिरिधरनाथसुखसासेवनकरतभए॥८७॥
चौपाई॥एकदिनआपुकरीयहलीला॥ब्रह्मगिरिकेगोरवासीला ॥
कछुकवातउनसंगहुरवलोई॥दानघाटिमगछोउसोई॥प्रभुनप
धारेकवहूंवामग॥आपुपधारेगोविंदकुंउउग॥याकोघाटवना
वनलागे॥यहमनठानीविभुनसरागे॥उस्तालाएटांकीवाजै॥

घाट वनावन प्रभु तहं छाजै ॥ मयौ परा(?)ह चित प्रभु मन धारी ॥ रतनैं
काहू बरछी मारी ॥ नाथ तहां लीला विस्तारी ॥ निज इछा आपु न सुख
कारी ॥ आपु पधारे लीला मांही ॥ करें विहार नाथ निज भाही ॥ अब इन
की मैं कहों बखानी ॥ नाथ निरषि इन चिंता जानी ॥ उन कों पठए श्री
जी जाई ॥ तुम करु जाय श्री गोविंद राई ॥ दोहा ॥ तुम कों सुधि अब क
रत हैं कहो जाय सब बात ॥ हम रौ इछा विदित तुम आपु पधारो तात
आए श्री गिरिधारि जू जहां श्री गोविंदराय ॥ करत हुते चिंता जहां मध्य
रात्रि के भाय ॥ सोरठा ॥ देखे श्री गिरिधारि भाई बउ उ आ इ जब ॥ उठि कैं
लिये विनय पहादी नों चरन तरि ॥ ५६ ॥ चौपाई ॥ तब प्रभु सुख सों आ
य विराजे ॥ कहे सुलाक नव रतन सुसाजे ॥ चिंता कापि न कायी याही ॥ प्र
भु इछा सब होइ जहांही ॥ और कहो श्री जी के मुख की ॥ आपु मि बाउ
पधारन सुख की ॥ प्रगट विराजे गेत हं जाई ॥ गुसाईं हों श्री उ आगि रिया ई

श्री
वा
७

हमसेंा कहीजाउ तुम अब वंही ॥ तुमकेंा चितवत है सुखसब वंही ॥ आय
सदैकैं माहिपठायो ॥ सिर धरि लोंहूं तुम जिगआयो ॥ महाप्रभुनने
पत्रिवनाई ॥ श्रीगिरिधरकी जन्म सुहाई ॥ नामधर्यो गोपालनाथ
को ॥ गोरक्षा मिस जान आपु को ॥ दोहा ॥ महा म्लेच्छ को मिसकीए वें
सवजनके साथ ॥ आपु पधारत तरूर नें श्रीगोवर्द्धननाथ ॥ सोरठा ॥
तातें रथ करि सिद्ध एक घरी दिन जब रहै ॥ कालहू त्रयो दसि सिद्ध
विजय करै श्रीनाथ जू ॥५७॥ चौपाई ॥ तातें जैसी इच्छा करिहै ॥ हमसे
वसेवक उहि सिर धरिहै ॥ जहां जहां रथ जाय नाथ को ॥ तहां तहां
तुम लिए साथ को ॥ लेम साल आगे कर धावें ॥ रूठे बाबा शिव जू जा
वें ॥ करत उजालो आगे जाई ॥ रात्रि माहि दिन आगरे भाई ॥ दोहि
रेउगग सेवा मग में ॥ गंगावाई सें प्रभु उग में ॥ करैं सदा आयस

मनमानी॥ एहियोतुमजोहोइअजानी॥ गंगावारितुमसेंकहिही॥
ब्रजवासीमगपरसनमरिही॥ जवब्रजवासीगारीदइहै॥ तवगिरि
तेंश्रीजीउठिजैहै॥ दोहा॥ श्रीगिरिधारीजूततबैंआयसदैसवभार॥
तवहीपधारेसुखसनेनस्यामंदिरधार॥ सोरठा॥ भएसवारेनाथ
राजभोगआरतिसकल॥ रथकोंसकलसिंगारअधिकासननसव॥
सिद्धकरि॥ ५८॥ चौपाई॥ जोतेवैलस्वरासनाथकों॥ सिलादंडौतीरथ
मुधारिकैं॥ ठाठेकीनेंआयसुहाना॥ उस्ताकरिउपचारसुजाना
करीदंडौतश्रीगोविंदराया॥ वालकसश्रीवल्लभभाया॥ तीनोंभारि
करजुगजारी॥ करीनाथसोंविनयवहोरी॥ सवसेवकमिलिविन
यवरवानी॥ तवप्रभुनेंकछुनाहिनमानी॥ जवब्रजवासिनगारी
दीनी॥ मंउकटावेगोयहचीनी॥ उठततनहींकेयोंअैसेतेंसें॥ यहसु

श्री
वा
४८

निवातहं सेप्रभुतवही॥ कमलप्रफुल्लतहैज्यांजबही॥ दोहा॥ उ
ठेनाथतवही सुखदरथहिंविराजेआय॥ पूतेयाआहुनमासकी
पाछिलपहिरसुहाय॥ सोरठा॥ सत्रहसौछत्तीससंवतसुभहोजा॥
समय॥ पण्णसिद्धकरवायश्रीवल्लभजूभोगधरि॥ ५८॥ चौपाई॥ र
थजबप्रभुकोहांकनलागे॥ नाहिनचलेएकपदआगे॥ तवसबमि
लिगास्वामिनकरजुग॥ जोरिविनयकरिसबहिनपदजुग॥ तवप्र
भुश्रीमुखआयसुकीनी॥ गंगाबाईसंगनहिलीनी॥ जबवाकोंगाडी
बैठारी॥ पाछेरथकेचलेहमारी॥ तवहोंचलोंउगरसुखमानों॥ ना
हिनमोकोरुचिहेजानों॥ यहसुनिकेंततकाललिआई॥ गाडीगं॥
गाबाइविठाई॥ जबगाडीमधिवैठीआई॥ तवहीरथप्रभुआपुचला
ई॥ जहंमगमेंरथअटकेजाई॥ पूछेगंगाबाईधाई॥ दोहा॥ पूछै॥

अरु सकल तवै जो निज इच्छा होय ॥ कारण सव हू कहे तव गंगा वा
ई साय ॥ सोरठा ॥ एक रात्रि में आपु आय पधारे आगरा ॥ लियें मसाल
महेस करत उजालो मग चले ॥१००॥ चौपाई ॥ आय हवेली आपु विरा
जे ॥ ऊती आपु कीत हम धिधाजे ॥ द्वै जल घरी यार हे तस्हां ही ॥ नहि
आए संग मंदिर मांही ॥ दूसर दिन नर देसपती के ॥ आए मंदिर हे
तु रती के ॥ हम मंदिर कों गेरन आए ॥ द्वै सत पुरुष साथ ले धाए ॥ उ
न दोऊ मधि जानन दीने ॥ जे आए सो मारि हु लीने ॥ द्वै जल घरिय
न मारे सव ही ॥ उस्ता भाज्यो गयो सु तव ही ॥ इन के मन में उपजी
ऐसे ॥ या तें वा कों होउ यो जैसे ॥ खबर करैं गो जा के ए ही ॥ आवें गे जव
मारें ते ही ॥ दोहा ॥ या विधि भयो अब वे सउ न आवे जे हम पास ॥ ले
कर में तरवार दोउ रहे ठठे षट मास ॥ सोरठा ॥ ना दिन भूष पिआ

श्री
वा
५८

सजेआए मारे सकल ॥ सत्रु वैरी धाय पांच सात सो संग ले ॥ १०१ ॥ चौ
पाई ॥ जे आए ते मारे सब ही ॥ रुकमदी यो देस धिपति तव ही ॥ कही
उजीर न आपु ल्याई ॥ ले धाओ वकु सेन सहाई ॥ तव हि विचार्यो श्री
गिरि नाथा ॥ ए दोउ भाई हनि सब साथा ॥ श्री गिरिधर बलदेव नर्दी
ना ॥ करै सकल को प्रान विहीना ॥ ताते इन को दरस न देहो ॥ इन को
मंदिर साथ छिपै हो ॥ दोउ आगरा आपु पधारे ॥ सिंह पौरउ न नाथ
निहारे ॥ करी दंडौत इन दोउ भाई ॥ आय सत्री मुख आपु सुनाई ॥ तु
म को श्री गिरिधर वलदीना ॥ करो म्लेच्छ तुम प्रान विहीना ॥ दोहा
॥ ताते मोको रुचित नाहि गह्यो भक्त हित वाक ॥ तिन तिन थल पै जा
य सब करो मनोरथ भाक ॥ सोरठा ॥ कालांतर के साथ आय पधारू
ब्रज इहां ॥ तव ही हो सब काज सब तुम को लीला धरो ॥ १०२ ॥ चौपा

ई ॥ तातें अब न हि युद्ध मचावौ ॥ हौं अब जाय आगरे छावौ ॥ दिव्य दृ-
ष्टि इन की तब होई ॥ रतनमयी गिरि निरख्यो सोई ॥ मंदिर अमित रत-
नमय देखे ॥ तिन मधि यह रतनन को पेषे ॥ पाछें देखे गिरि मधि
लीना ॥ सकल मंदिर के संग ऊ कीना ॥ जहँ दरवाजो वाहिर होई ॥ ऊ
ते नगर्रा घर हो सोई ॥ देखी महिजत एक तहांही ॥ देख्यो एक मले-
छ महांही ॥ दाठी मंदिर निज सों न्यारे ॥ दोऊ भारन सकल निहारे
परि तव श्रीजी की इच्छा मानी ॥ भयौ ज्ञान पूरन जानी ॥ दोहा ॥ तव ही-
दीने आरउन सत्व करन तें आपु ॥ लौकिक देहन त्यागि कें पाउं चे प्र-
भु परिताप ॥ सोरठा ॥ दोउन के ही नाम जल घरी या जे नाथ के ॥ से-
वा रइ कहि वषान दूसर को संभ्रम कहो ॥ १०३ ॥ चौपाई ॥ सत्र रहे वरह-
ते जे आए ॥ अष्टादस वी वे रसि धाए ॥ मंदिर सहित पधारे सोऊ ॥ प्रभु

श्री
वा
५०

पदकमलसायभएआजु॥पाछेआएयवनतहांही॥नदिमंदिर
नहिवेउजहांही॥एकनबावफौजलैसाथ्या॥आयोजहंहेश्रीगिरि
नाथ्या॥देखोनाहिनमंदिरदीसे॥नाहिनवेऊजिनसवपीसे॥त
वैवैठिमहिजतवनवारी॥पाछेगयोआगरेधारी॥जवश्रीगिरिव
रनाथपधारे॥चलतचलतपदआगराधारे॥रातिघडीछेवाकी
मवही॥खुलेदुआरपायप्रभुतवही॥दोहा॥खुलेहतेसववारत
वसोएचौकीदार॥ढूंढेकिनऊनआतप्रभुगएहवेलीवार॥सोरठा
॥आपुविराजेआयरथहतेप्रभुउतरिकैं॥सुंदरसुथलसुठारसव
परिकरकेसंगहू॥१०४॥चौपाई॥आयविराजेसवहीसुखसो॥अन्न
कूटकीआयसमुखसों॥उत्सवकरिहमचलेरहांते॥करैंसकल
सामानउछाहते॥आयपधारेजवाहिंनगरमें॥देसपतीसोया

हो घरमें ॥ महिलन मध्यकों कराइए ॥ जुहंहु परसो वेदरसनभाए
सदाविद्योनाकों करक्करही ॥ द्वैरोटीनितजोकीसरिरही ॥ चोराभीजो
विनहीभाजी ॥ याविधितपस्याकरतेसाजी ॥ सोयोहूतोकाकरन
ओही ॥ दीनीलातपीठमेंसोही ॥ सुपनेंमोरुलगीजबलातो ॥ कहीना
थस्रीमुखसोवातो ॥ दोहा ॥ अबहीआयोआगरेउठिकैंस्रीगिरिराज
रुच्छाअपुनीमानिकैंसबपरिकरलेसाज ॥ सोरठा ॥ जोकछुतोसों
होयकरिसकिहेसोलेउकरि ॥ यहकछुनाहिनबातचोरीसोंनहि
जातहम ॥ १०५ ॥ चोपाई ॥ तवहीउठेयामेंछउहिजागी ॥ नाहिननि
रषेस्रीजीआगी ॥ लातपीठमेंचिन्हसदाई ॥ मरणपर्यंतरह्योजहं
हाई ॥ पीठदिखाईनाहिनकाहू ॥ नहिंयहवातकहीकिहिंवाहू ॥
दोऊभाइनसहितगुसांई ॥ आएसंगस्रीगोविंदराई ॥ स्रीनवनीत॰

श्री
वा
५१

प्रियश्रीगोकुल॥ रहेविराजेतहां सुगोकुल॥ पधरावेकेहेतपठाए॥
सेवकयांतेगोकुलग्राए॥ श्रीदाऊजीजहांविराजे॥ ग्रायकहीपध
रावनकाजे॥ वङुवेटिनकोंसंगलिग्रावौ॥ प्रभुनसाथसवपरिक
रलावौ॥ दोहा॥ सुखिग्राविठ्ठलदासजूदुवेभगवदीभाय॥ उन्हेंजा
यकहिसौसकलपधरावौप्रभुधाय॥ सोरठा॥ सुनीदुवेजूवातक
योस्नानवाहीसमय॥ संखनादकरिजायग्रायजगाएप्रभुनकों
॥१०६॥ चौपाई॥ पहिरएकतवरातगरही॥ प्रभुकोंनिद्राछायरही
ही॥ विनयकरीवङुप्रभुनहिंजागे॥ हाथलगाएतवङुनरागे॥ त
वमानीप्रभुइच्छानाहीं॥ सोयोजायचौककेमाहीं॥ मनमेंदुवेवि
चारीप्राता॥ घरीचारिजवरहीसुराता॥ स्नानकीयोतवसुदेहा
यकरि॥ नईसिद्दसामग्रीकरधरि॥ ग्रायजगाएप्रभुउद्धवारी

धर्योभोगमंगलसुखकारी॥गोपीवल्लभभोगधरायौ॥म्यानालार
प्रभुनपधरायौ॥ढ़्ढीलीनेंभीतरीयासाथ्या॥कछुजलघरीयाप्रभुके
पाथ्या॥दोहा॥भए दुवेजूसाथतबम्यानालयौउठाय॥चलेग्राग
राप्रभुनलैसुखसेंा निजहितभाय॥सोरठा॥पहिरचठ्योदिन
आयगऊघाटपहुंचेजबहि॥तीसरसुतश्रीस्वामिबालकसु
जूप्रभुमए॥१०७॥चौपाई॥इनकेनातीश्रीव्रजराया॥इनवर
दानकवहुप्रभुपाया॥एकदिनांहुमतुमरेह्याथ्या॥अरुगेराज
भोगसुखसाथ्या॥श्रीनवनीतप्रियवरदीना॥इनअपुनेमाथे
धरिलीना॥अबसबकथावषानोंपहिली॥श्रीगोस्वामिनआगे
सहिली॥जबश्रीनवनीतप्रियपोढे॥हुतीरीततवकीसुखसोढे
श्रीगोस्वामिनबालकसवही॥भीतरीयाबाहिरकोंजबही॥पा

॥अव मंदिर की कहों वषानी॥ प्रभु नहि निरषे सय्या यानी॥८॥

श्री दै मिलि सब सातें घर की॥ वहू बेटी अंवे परिकर की॥ चरणस्पर्शि
वा करें प्रभु के सब॥ या विधि सेवा सानि जाय तब॥ दोहा॥ तीसर सु-
५२ त श्री स्वामि जू वालकृस्न महाराज॥ श्री पीतांवर तिन तनुज तिन
के वहू सिर ताज॥ सोरठा॥ पाछै सब सें जाय प्रभु के चरणस्पर्श क
रि॥ श्री मुख वचन सें भाषि आय सकारे तुम घर चलें॥१८॥ चौपाई॥
प्रभु कों लै वोली टवकाए॥ घर अपुनें तब लेपधराए॥ सगरी राति वि
राजे आई॥ सेस निसा में वोले भाई॥ श्री गोस्वामिन के घर मांही॥ मो
कों ले पधरावो जांही॥ जब मो कों श्री गिरिधर राई॥ मंदिर देखन हि
मुरझाई॥ जब नहि देखे श्री गिरिराई॥ कही श्री गोकुलपति न सुनाई
दोउ भाइन मन सों चुहि पाई॥ तब बोले श्री गिरिधर राया॥ कहु का
रण है प्रभु न सुहाया॥ श्री गोस्वामिन हम रे माथा॥ पधराए नि

जप्रभुसुखसाध्या॥ दोहा॥ तातेंहमकूं छोडि कैं कहुं नपधारें नाथ॥
एसेकहि वैठे प्रभू ओलत्तिवारीजाय॥ सोरठा॥ करें ध्याननमनमांहि
श्रीगोस्वामिनचरणको॥ इहांकहीफिरिआपुश्रीवल्लभजीमहारा
निसें॥ १०८॥ चौपाई॥ हमकोंलेकेचलावेगिअब॥ करजुगजोरिवि
नयकीनीतव॥ राजभोगकोंआपुअरोगे॥ पाछेंचलेनाथसुखभो
गे॥ श्रीनवनीतप्रियनांहीकीनी॥ कोरइककालकीआयसदीनी॥ ए
कदिनांहमलेहैंजाई॥ तुमरेसुतकरहोंहुभाई॥ अवहमकोंलेच
लोउठाई॥ सय्यामंदिरमेंपधराई॥ तुमकोंदेखेनाहिनकोई॥ सुनि
आयसलेसिरधरिसोई॥ लैपधराएसय्याजहांही॥ आयपधारेघर
मधितहांही॥ एआएअपुनेघरधाई॥ इतनेंपधारेश्रीगिरिराई॥
प्रभुनेंजायजगाएजवहीं॥ जागेप्रभुसय्यापेंतवहीं॥ दोहा॥ धरे

श्री मंगलाभोगतवश्रीगिरिधरमहाराज॥वहुवरप्रभुकोसुधिल्है
वा तोपूरवश्रीव्रजराज॥सोरठा॥जानिपधारतआपुश्रीनवनीतप्रि
५३ यप्रभुन॥करयोसिद्धसामानगऊघाटपैआयतव॥११०॥चौपा
ई॥जातपधारतप्रभुजूधाई॥अटकैयोम्यानामगमेंआई॥कह्यो
आयकैंश्रीव्रजराजा॥सुनौहुवेजूप्रभुसुखसाजा॥भूखहेश्रीमा
खनभाया॥राजभोगहमकरयोसुहाया॥प्रभुकोलेपधराौआपु
न॥भोगअरोगेसवसुखयापुन॥आयपधारेप्रभुजूजहां॥गऊ
घाटपैभोगसुतहां॥श्रीव्रजराजभोगप्रभुधरयो॥इनकोमनअत
सयसुखभरयो॥प्रीतिसहितप्रभुवैहिअरोगे॥आपुपधारेसंध्या
जोगे॥कह्योहुवेजूसोसवसेवा॥सावधानरहुआपुसुदेवा॥दोहा
॥संध्याकरिवेप्रभुगयेश्रीव्रजराजकृपाल॥अचमनवीरीदुवेजू

करीसवारीचाल॥सोरठा॥वैठिमिआनामांहिआपुआगराकौं
चले॥चलेसीघ्रही धायपहिरएकनिसिसोंदइए॥११६॥चौपाई॥आ
यहुवेलीआपुविराजे॥श्रीगिरिधरकेसंगहीछाजे॥श्रीवल्लभकुल
ग्ररूवडूवेटी॥हृतेमगनसवचिंताभेटी॥जबहीश्रीगोकुलतेंआए
सवहिनकेमननवनिधिछाए॥श्रीगोविंदश्रीबालकृस्नजी॥श्रीदा
ऊजीसवहिंसाथजी॥करैयाउथापनसेनभोगसव॥आरतिकरि
पोढाएप्रभुजव॥श्रीगोविंदजूअतिसुखपाए॥विठ्ठलदासडवेवा
लाए॥हमरेससरवसुतहमप्रभुलाए॥तातेंतुमहमकोंअतिभाए॥तु
मयातेंमांगोवरदाना॥जोतुमभावेभाषोमाना॥दोहा॥हाथजो
रिविनतीकरीमुखियाविठ्ठलदास॥यहुवरमांगोंआपुतेंसदासे
वसुखरास॥सोरठा॥सेवादोऊनाथकरेंसदामोवेसकें॥श्रीगि
रिवरकेनाथदूसरश्रीनवनीतप्रिय॥११७॥चौपाई॥एवमस्तुभा

श्री
वा
५४

षीलोंग्रेम॥ तुमरे हिं वंसीसेवें जेसे॥ हमरे वंसरहेजोकोई॥ तुम
रे वंसिन पीठनदोई॥ यहवरदीनोंप्रभुमनभाई॥ अवरकलो
मेंकथासुहाई॥ हलकारेसवन्प्रापुवुलाई॥ कह्योभाषिश्रीगोवि
दराई॥ जोलोंहमयहनगररहाई॥ तोलोंतुमनरपतिनसुनाई
हतेसभीयासेवकघरके॥ तातेंनाहिनभाष्योउरके॥ अन्नकूट
कोउत्सवभयो॥ सवसामानगुसहीदयो॥ भातठिकानेंरवीलांध
रिकें॥ सवेअनुसारसभीकुछकरिकें॥ दोहा॥ पूजासवगिरिरा
जकीगुप्तकरीउहिभाय॥ करीसमग्रीविधिसहितश्रीमदगो
विंदराय॥ सोरठा॥ गंगावाईआयकरीकीर्तनसेवतहां॥ उदघो
षनहूंसाजगुप्तकीयेसवभावतें॥ ११७॥ चौपाई॥ अन्नकूटजव
गयोविहाई॥ गंगावाईप्रभुनसुनाई॥ चलोनाथअवजापैमा

ई॥धारदंऔतीस्रीमुखगाई॥आयकहीस्रीगोविंदराया॥मुनि
चलिवेकोसाजवनाया॥करीसिद्धरथमांहिपधारे॥धारदंऔ
तीकोमगपारे॥राजभोगआरतिउहिंकीनी॥विजयकीएचढि
कैमगलीनी॥जवदरवाजेआपुपधारे॥नाहिनकाहूदरसेसा
रे॥आपुपधारेआगेहूंकैं॥नेत्ररहेसवकेआधीहूंकैं॥एसेरचलि
तमजलपेआए॥दिनघडीद्वैकपाछिलोआए॥दोहा॥उहांकीनें
आयकैंउत्थापनसुखसाय॥सेंनभोगआरतिभई॥पोढेनिजसु
खनाथ॥सोरठा॥दूसरदिनमेंजायहलकारांकीनीखवर॥सा
हिवसुनीयेवात्तगिरिवरकेठाकुररहां॥११४॥चौपाई॥आरहल
वेलीनिसिमेंरहे॥प्रातहोतवेकोमगगहे॥सुनिनरपतिसैंयां
सवदीसुनाई॥रहेहलवेलीतुमकिंहिभांई॥तववानेंजारेकर॥

दोऊ ॥ विछरे पातर दोना होऊ ॥ यातें हम नें जानें सोई ॥ पानीव
हुतपना रन होई ॥ तातें हम ने मानें ओही ॥ नाहिन उन विन क
रियहकोही ॥ सुनि नरपति मन में मुसिकाई ॥ तव वोल्या नरप
त्ति उहि ठांई ॥ आए वहुत दिवस उन भए ॥ द्वै दिन उन कूं भए जुग ए ॥
तीस रदिन तुम सब वरजु दीनी ॥ जा दिन आए हम हूं चीनी ॥ दोहा ॥
हूं स मन में कछु नाहि ने मैं हूं उन को दास ॥ जो मालिक फरमाइ हो
र हों सदा में तास ॥ सोरठा ॥ यह जो उन की वात मत्त काहू सों कहे
रू ॥ जहं उन की हो सोक तहां रहें वे जाय कें ॥ ११५ ॥ चौपाई ॥ खब
रदार कहि हो नहिं किहि कों ॥ सुने जु मुल्ला जाय सुतिहिं कों ॥ नर
पति को मुर सद इक होई ॥ मुल्ला हुतो दुष्ट अति सोई ॥ करामात
नरपति जिति हिं चाहे ॥ नाहि देइ तो मुल्ला धाहे ॥ देव लोय तेतो खव

उतकरई॥ मंदिरत्तिनकेठावतफिरई॥ रहतीजुमुलांवकग्र
तिपापी॥देवतानखंवउनपरतापी॥ रहैंसदावाकेसंगग्रेसे॥पा
चसतकपापीउहिजैसे॥मुनीवातकाहूतेंवानें॥गिरिवरदेवआ
गराजानें॥आएउठिकैंरहेरहांही॥धारदंडोतीकोंग्रवजांही॥
॥दोहा॥पाद्देदोरयोदुष्टवहयवनलीयेवऊसंग॥नरपतिकह्योवु
लायकैंनाहिनतुमकोंचंग॥सोरठा॥करामातकेदेवतुममत्ति
पीदेजाउउनि॥उठैयाग्रापुकेसोकफिरैजहांवाकीषुसी॥१२६॥
चौपाई॥मैंनेंनाहिउठायोवाकों॥गयोआपुकीषुसीजहांकों॥न
रपतिवाकोंवऊसमुझायो॥मान्योंनाहिनपापीधायो॥पादेपा
हुआवतहोई॥उतरेचामिलपारजुसोई॥एकपहरदिनवाकीर
ह्यो॥प्रभुकोरथतहंग्रटकतभयो॥तवपूछीश्रीगोविंदराया॥गं

श्री
वा
५६

गा बाई पूछे गिरिधर ॥ कारह्यो है बाबा तुम कर ॥ तब बोले श्री मुखा-
सों आपुन ॥ करेउ छलो तुम ग्रवी उद्यापन ॥ आजु रलों चामिल के ती-
रा ॥ आयस दयी आपुरन धीरा ॥ दोहा ॥ रतनेली वहतु रकत बठ-
ठो चामिल पार ॥ भयो आयत ताही समय श्री गोविंद उदार ॥ सोर-
ठा ॥ करी तयारी ठाठ उद्यापन श्रीनाथ कूं ॥ भयो चित्त उद्वेग वा-
पापी कूं देखि के ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ गंगाबाई सों प्रभु कह्यो ॥ पूछो प्रभु
सों यह काहे ह्यो ॥ गंगाबाई पूछ्यो प्रभु सों ॥ ठाठो पार म्लेछ वहा-
विभु सों ॥ उद्यापन की आपु कही ही ॥ याविधि आयस नाथ दई ही
वाही विधि प्रभु आयस दीनी ॥ तुम को वाकी कहा जु हीनी ॥ जो आ-
वे गो हम ही सम्मुख ॥ तुम सब सेवक करो मन न सुरजें ॥ करयो सखा-
को नाद सुतवही ॥ रथ प्रभु को दीसत भयो अत तही ॥ हुतो पार

वहुयवनरखउंहौ॥रहौथकितविसमैदीगउंहौ॥दीस्यापरवत
समवाकोरथ॥जेनरहतेसंगकेसिंहुजथ॥दोहा॥सबहिनको
दीसतभएसिंहहिंसकलकराल॥ब्रजवासिनकेसहूउनभासेस
बहिनकाल॥सोरठा॥आपसमेंबतराइनाहिनकोऊनरयं
हां॥कालसबनहियमानिप्रानराखिभागोसबहिं॥११८॥चौपा
ई॥इतनेंकूरतविचाररखउंहौ॥द्वैजलघरीयाआयठउंहौ॥आये
पानीलैवेदोऊ॥इनहीमान्यारखवेसोऊ॥जौकदाचिसबहीमिं
लिआवैं॥हमसबकोंवेखायसिधावैं॥इतनेंहीपात्रनमांजाआए
इनसबहीजानेंयाहमखाए॥तातेंसबहीभाजोभाई॥नाहिनजी
वनतेंरहिजाई॥उठिभागेसबहीतबतहंतें॥कपउासहगिरेउर
जहंतें॥नाहिनरहीसंभारसरीरा॥जहंकछुपरेसोरहोहीतीरा
पाहदफिरिकैंदेखोनाहीं॥गएतहांतेजीवतजाहीं॥दोहा॥या

श्री
वा
८७

विधिभाजेसकलवरुनांहिसरीरसंभारि॥ जौलौंघरआपुनग
एतौलौंवहीनिहारि॥ छंद॥ तौलौंवहीनिहारभारसिंहनभय
भारी॥ सबदवहीतिंहिकाननपरतनहिंहेतसुटारी॥ सबदि
नवहीनिहारऊरसिंहनदुखमनमें॥ जितकितदीसतमनु
जतहोमानतहीवनमें॥ यहसबसिंहनिहारपरतुघरनीम
धिउरकैं॥ हमसबकोलेखांहिजोहिपाछेहीपरकैं॥ जागत
सोवतचलतसुथलवरुदीसतडोलत॥ सुनतसबदअतिघोर
दुखितनहिटरतसुबोलत॥ खानपानसुधिनांहिउरतकिं
हिंकरहमवचही॥ सबदिसिरूपनिहारसबदवरुपरतसुर
चही॥ घरघरकांपतगिरजपरतमगचलतविघरही॥ सरु
तनहिंकछुग्यानध्यानवरुपऊंचतघरही॥ सोरठा॥ जीवत

लीघरमांऊपकुंचे सिंहनजारतें। जो इकपलनहिं धायरवाएक्षे
तेसवनमिलि॥११८॥ चौपाई॥ याविधिगए मलेघरांई॥ प्रभुसुख
सेंसबसेवकराई॥ याविधिसोचें सबघरमांही। अवनहिंकाहूदे
वसतांही॥ गएआगराप्रानलिवांई॥ करामातयादेवदिखाई॥ दू
सरदिननरपतिपैगयो॥ सकलजायकेंउनमुखकह्यो॥ मुल्लांवो
ल्योनरपतिभाई॥ करामातमेंदेखीजाई॥ नीठनीठहमजीवततये
ए॥ नांहिनऊतेशेरसबखाए॥ हंसिवोल्यानरपतिमुल्लांसों॥ हम
तुमवरजेकहिमुल्लांसों॥ तुमनहिंमांनेगएतहांको॥ लीयेजाय
फलपकुंचियहांको॥ अवकोऊआगेदेवसतावो॥ पावैगेतुमअ
पुनोंभावो॥ सोरठा॥ सुनिनरपतिमुखवैनवोल्यादुखकोंयादि
करि॥ थरथरकांपतगातमुखसोंवचनिकसतनहीं॥ नीठनीठ॰

श्री
वा
५८

जीयराखिवञ्ञाएमबवल्लमघरननमें॥ह्लमनहिमानीवाततताकोफल
देखेंगोसभी॥दोहा॥ग्रबवल्लभकोऊदेवतानाहीजायसताइ॥कस
मकरेंहमञ्ञापुकीयह्लनहिमूलपयाइ॥सोरठा॥वऊविधिमन
पछितायमुह्लाञ्ञपुनेंगातमें॥करिदंउवतगिरिनाथमूलनञ्ञै
सीकरेंहम॥यह्लकहिञ्ञपुनेंधामगयोतह्लातेदुष्टवह्ल॥जीयाजो
लोञ्ञापुलीयानकवह्लनामकिंहि॥१२०॥चौपाई॥दूसरदिनकी
कहोंकह्लानी॥गंगाबाईसोंनिजवानी॥ञ्ञापुकह्लीञ्ञीगिरिपतिसा
या॥कह्लोंजायश्रीगोविंदभाया॥मोकोंचामिलपारउतारो॥धारद
रौतीकोपगधारो॥विजयकीएप्रभुञ्ञापुतह्लाते॥ह्लसपुरावेरह्ल
जह्लाते॥मुखसोंञ्ञापुविराजेदेवा॥भरतह्लामुखप्रभुकीसेवा॥ञ्ञ
वह्लीकह्लोंपाछिलीवाता॥श्रीगोस्वामिनकेमतवराता॥तत्तीयपु

उश्री गोस्वामिन के ॥ बालकृस्न श्री नाम जु तिन के ॥ धरें वे श श्री नं
दरानी को ॥ जव जन मह मिल्हाय धनी को ॥ दोहा ॥ श्री गोकुल के धा
म में पलनां में लै गोद ॥ श्री नवनीतप्रिय प्रभु दूध पी एकारे मोद ॥
सोरठा ॥ नंद महोत्सव मानि करैं भाव सव प्रगट करि ॥ कीर्तन
में सुख जानि बालकृस्न श्री आपु ही ॥ १२५ ॥ चौपाई ॥ जव लै प्रभु गो
दी के मांही ॥ अस्तन प्रभु के दूध चुवांही ॥ पीवें आपु सवन के देख
त ॥ प्रगट भाव सव करैं सुपेखत ॥ श्री नवनीतप्रिय प्रभु लीला ॥ ट
रसें बालकृस्न सुख सीला ॥ होत अवेस प्रभु को ऐसो ॥ नंदरानी के
हुतो जु जैसो ॥ यह पद गावैं प्रभु उहिवारी ॥ धरें यथामति निज अ
नुसारी ॥ वहुरि लिंये जव जननि गोद करि ॥ अस्तन चले चुचाय वा
हि धरि ॥ यह गावें पलना सुख काला ॥ तुम ब्रजरानी के हो लाला ॥ ज
व यह गावें दूध चुचाई ॥ पीवें प्रभु उन भाव दिखाई ॥ दोहा ॥ तव हो श्री

स्वांगोमिजूअपुनेंकरनउठाय॥पधरांवेंपलनातबैंभावरहिजी
यभाय॥सोरठा॥यहजानेंमनमांहिमातचरणआवेसहून॥भा
यौसकलहीआयभरप्रसन्नअतिहीप्रभू॥१२४॥चौपाई॥श्रीगोस्वा
मिनकहीसुनाई॥मांगोवरजोतुमजीयभाई॥कहिकरजोरिअपु
मुखवाता॥वर्षवर्षप्रतिमोहिरहुराता॥मातचरणआवेसदेहु
प्रभु॥कछुदिनश्रीजीसेवनकोविभु॥यहमनमेंमोरेवरदाना॥दे
ऊनाथजिंहिभावैजाना॥सुनिश्रीमुखतेंकहीसुनाई॥होयहूअवे
सयहीदिनआई॥जोलोंभूतलतुमवपुआही॥दूसरकहीसुनोंअ
वजाही॥श्रीगिरिधरकेवसीसवहीं॥करैंनाथकीसेवनजवहीं
यातेंश्रीजीउनभुजपकरे॥अवकेंयाछूटेहमतेंतकरे॥दोहा॥
तातेंअवयहहोतहैजवदेसांतरजाइ॥कछुककालवीतेभयो

गिरिवर तजि निज भाइ ॥ सोरठा ॥ तुम रे नाती होइ करै सेव गिरि
धरण की ॥ दिन हि सताई सोइ नाम होय ब्रजराज श्री ॥ १२३ ॥ चौपा
ई ॥ जब ही होय अठाइस मां दिन ॥ सेवा अपुनी लेहि घोन छिन ॥ य
ह वरदान दीयो हो प्रभु नें ॥ श्रीमद् वालकृस्न कों विभु नें ॥ इनके श्री
पीतांबर होई ॥ इनके श्री स्यामल जी सोई ॥ इनके सुत श्रीमद् ब्र
जराया ॥ रहें आपु नरपति पे भाया ॥ भयो खुसी नरपति इन ऊ
पर ॥ कह्यो मांगि वे कों मुख सूकर ॥ वारह वरस रहे हम पासा ॥ तु
म मांगो जो है जीय आसा ॥ सुनि इन कहि नरपति सों भाई ॥ उठे दे
व जे गिरिवर राई ॥ करों सेव मे उनकी जाई ॥ सुनि नरपति कहि
यह कठिनाई ॥ दोहा ॥ जो सेवत पहिले सदा वे कोंं उठि है आज ॥ या
तें तुम रहक मास लौं करो जाय सब काज ॥ सोरठा ॥ लेऊ जाप तासाथ
हम रो वृच रूठो नहीं ॥ आगे रहि यों ना फिर रहियो हम पे आय कें ॥ १२४

॥चौपाई॥चलेजायतासंगलेसाथा॥आएतहांजहांश्रीनाथा॥आ·
पुविराजेकृष्णपुरामें॥श्रीव्रजरायकुमोदभरामें॥गंगाबाईसौंयहु
आखे॥कह्योजायश्रीगोविंदभाषे॥सबकुटुंबअरूपरिकरहमरे॥
दोउहमेंअबलेकेसगरे॥जाऊंअनतकछूकरौनिवासा॥श्रीव्रज·
राजकुमारेपासा॥देहूकगामकोसदसहोई॥करौनिवासधारजा
सोई॥एकमहीनारहोजायकरि॥फिरिसबसेवाकरौआयघरि॥
वेआंवेंगेकालहूरहांही॥आपुआज्ञुजारहौतहांही॥दोहा॥आएहैं
वेरहौकोनरपतिनरलैसाथ॥रहेसततांईछहदिनावरश्रीविठ्ठलना
थ॥सोरठा॥कहीआयसबबाततगंगाबाईप्रभुतवें॥सुनिश्रीगोविंद
रायचलेसबननकोसाथलै॥१२५॥चौपाई॥देवदमनहैंसबकेभर्ता
कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्ता॥इनकीइच्छामाननिकहैयो॥विप्रयोग·
गोस्वामिनिरहैयो॥मानसप्रकारमेंअनुभवकीनो॥तातेंहमरहूकों

प्रभु दीनैं ॥ इच्छा जानि नाथ की तबहीं ॥ करी तयारी प्रभु नें जबहीं ॥
कह्यो श्लोक महा प्रभु को सब मन ॥ धरो नाथ की इच्छा सब मन ॥
भलो बुरो सब प्रभु ही करि है ॥ अपुनी इच्छा तें ही सरि है ॥ विनय क-
रें कहा जानत नाहीं ॥ अंतरगत हू सब मन माहीं ॥ विवेकस्तुहरिद्या।
हु कह्यो ॥ भाव समुझि निज मन दुख सह्यो ॥ दोहा ॥ उनको बल कछु
नाहिं नैं सपनें कु मन हूम मांहि ॥ श्री गोस्वामिन बर इन्हे सफल-
होइ जिहिं जांहि ॥ सोरठा ॥ हम को मान नो सोइ दिन सत्ताईसौं उ
ही ॥ पाछें लेंइ घिनाइ सेवा श्री गिरिधरण की ॥ १२६ ॥ चौपाई ॥ यह
कहि सब हीं संग लिवाई ॥ साथ लिये प्रभु गंगा वाई ॥ चले तहां तें प्र-
भु की सेवा ॥ छांडि नाथ निज श्री गिरिदेवा ॥ प्रभु पधारें आपु तहां
हीं ॥ गंगा वाई दरस जहां हीं ॥ नित प्रति दरसन दैन पधारें ॥ गंगा-
वाई नित हिं निहारें ॥ अब हीं कहों श्री गोविंदराया ॥ विरह विकल

श्री
वा
६१

अनुदिनयहभाया॥याविधिब्रजजनविकलरासमें॥रूंधतउा
लतफिरततरातमें॥श्रीशुकदेवकथासबगाई॥विप्रयोगमेंजगत
दिखाई॥सोसबप्रगटश्रीगोविंदराया॥विरहदसाप्रभुजगदरसा
या॥दोहा॥द्वैजलघरियारहेतरुपातरमांजादोय॥औरसभीप्र
भुसंगलेचलेनाथतजिसोय॥सोरठा॥इतनेंहीश्रीब्रजराजआए
प्रभुकेकमलमें॥करैंसेवश्रीनाथअपुनेंपरिकरसंगलै॥१७॥चौ
पाई॥अबहैंकहैंनाथकीकरनी॥विरहदसानहिंजातजुवरनी
लैसबसाथविराजेआई॥तपतहृदयकिंहिकहैंसुनाई॥अनुलए
विरहअगनितनुधावें॥फलोफारकोभागधरावें॥अन्नत्यागि
करिदीनोंतवहीं॥छाउगिरिधरपदजुगजवहीं॥विप्रयोगनहिं
सरिमनमांहीं॥उदासीनहीरहैंजहांहीं॥उठितभोरजोगी

वपुधारें॥ धरिमम्रतमग ढाल सुसारें॥ लेकाधे पैवीनाकरमें॥ गु
रूआपुवनकरिउठिघरमें॥ दूरजोहोरो उातिंन्हिनामा॥ चेलाकरें
वाहिसुखधामा॥ दोहा॥ सारंगीउन्हिकरगहे सुंदरसुखदवजाय॥ प्र
भुकेचरनसरोजसंगचलेनाथकेभाय॥ सोरठा॥ घरघरअलखज
गायगुरूचेलादोऊफिरें॥ लरिकागयोपरायपूछतसबसोंह्यांफि
रें॥ १२८॥ चौपाई॥ विरहवंतनिजभावदिखावें॥ घरघरसवकेअल
खजगावें॥ याहीविधिवनवेलिनपूछें॥ तुमनहिंदेख्योफिरिफि
रिपूछें॥ लेसारंगीचेलगांवें॥ वीनआपुलेगुरूसुनांवें॥ दोऊमिलि
कैंगांवेंघरघर॥ अलखजगांवेंनितहीदरदर॥ याविधिपूछेंसर
वभांतिसों॥ विरहनवरन्योजायख्यातिसों॥ गदगदकंठविराजे
देवा॥ आंसुनमालपरोवेंभेवा॥ रागजोगीयासावरीगांवें॥ घरघ
ररहिकेंद्रहपदभांवें॥ वनवारीअलीकेंकेंसेपैहे॥ जीयआवेजो

श्री गी है जै है ॥ दोहा ॥ लिख्यो यथावत याहि नहिं समुझो पद ही सो
वा रु ॥ याक्रम तें नहिं आवतो धर्यो पलटि कैं जोर ॥ सोरठा ॥ जानि कू
६२ हि आजान फिरें सहा प्रभु आपु तें ॥ दूढत ठौल तज्ञापुलरि का हम
रोग ह्यो कहूं ॥ २३० ॥ चौपाई ॥ ढूंढत फिरें ताहि हम सगरे ॥ मिल
त नाहि वह देखत बगरे ॥ याविधि विकल विहाल महाना ॥ तनु
सुधि नाहि रटत जिहं नाना ॥ नित प्रति सकल वियोग धरांवें ॥ र
टत सदा तिहिं पद हम पावें ॥ यामिसि फिरत रहित दिन राती ॥
लख्यो न काहू प्रभु किंहि भाती ॥ नहिं चीन्हे श्री गोविंद राया ॥ र
हे सदा अपुने सुख भाया ॥ वन वन घर घर फिरत सदाई ॥ दिवस
विता वन निज हित भाई ॥ कबहुं कि वस्ति न माझ सिधावें ॥ कब
हुं कि वन वन प्रभु उठि जावें ॥ फिरत फिरत दिन गए विहारें

एक दिन प्रभु जू उहि दिसि धाई॥ दोहा॥ चलत चलत आए तहां
प्रभु जू निज पद धारि॥ बैठे बाहिर गाम के गुरु चेला उहि वारि
॥ सोरठा॥ सुखरूप पुनें मैं छाय गावत निज कर भाव सों॥ प्रभु
के विरह विहाल वरन्यो जात न तन कहूं॥ २३४॥ चौपाई॥ र
ग भभूत तनु सो है सारी॥ मृग छाला कर बीन सु धारी॥ सारंगी
चेला ले गावै॥ आपु साथ मिलि बीन वजावै॥ गाम वहिर वह
ह तौ तलावा॥ तहं प्रभु बैठे सुख निज छावा॥ गावत हुते आपु
मिलि चेला॥ आए जल घरी या उहि वेला॥ राज भाग के हां उमा
जै॥ आपस दोऊ बात न साजै॥ हों इक वकुं श्री गोविंद राया॥ ले
यधि नाइ लाल गिरिजा या॥ देखे इन को नहिं पहिचानें॥ मां
जन लगे दोऊ लेवा नें॥ ना हिन कोऊ ऐसो भैया॥ वं सश्री वि

श्री वा ६३

ठ्ठलरायप्रभुदेत्या॥याहिनिकारेघरकुत्रभायें॥सुतश्रीविठ्ठलरा
यप्रभुचारे॥दोहा॥बडेमर्दहेसोनहीश्रीमदश्रीगिरिधारि॥और
कुंश्रीगोविंदहूत्तेवेअबनाहिनिकारि॥सोरठा॥कुतेकहुंयावा
रअवहीलेंयछिनारसव॥यहसुनिउरनिरधारिगयेजोगी
यातादिपे॥१३४॥चौपाई॥पूछींवासोंजायत्तवेंदी॥कहुभया
यहवातसवेंही॥बोल्योसुनिकेंसुनोंनाथयज्ञ॥नादिनद्मनके
फौजसाथज्ञ॥रूकलेहीअबआपुविराजें॥होंरश्रीगोविंदवेअब
घाजें॥यहसुनिअपुनोंवेसविहायो॥अपुनोवपुअभिरामदि
खायो॥न्हारइअपसेंघावतीधारी॥ओढ़िउपरएगरवासिक
टारी॥चलेसंगहीवाहिलिवाई॥आगेवाकोंलीयोलगाई॥इत
नेंमेंमेलाउहिवेलो॥श्रीअजगरवनेवेसुबनोवेलो॥कारीभ

रिअचमनकरवाए॥पाद्येवीराप्रभुनधराए॥सेवासवसोंपउंवि
कराई॥आरतिकीसामानवनोई॥दोहा॥रतनेंछिकरतअचान
कआइश्रीगोविंदराय॥पकरिहाथदोनीऊपटआरतिकरछि
धिनाय॥सोरठा॥काछिकदारीआपुकहीजुश्रीब्रजराजसों॥ह
मतुमदोऊसाथहोंइचरनरजप्रभुअवी॥२३३॥चौपाई॥आर
तितीसरकरिहैकोई॥वऊदिनतुमतेंआरतिहोई॥जोतुमजा
आइहितेंअवही॥नांतरिधरिहोंउरमधिसवही॥पाछेंतेंआपु
नकोंमारैं॥तुमतेंनांहिनसेवसुधारैं॥करिहैंश्रीदामोदरसेवा
देखतहैंश्रीगिरिधरदेवा॥प्रवलहतेश्रीगोविंदराया॥श्रीब्रज
राजत्रासमनघाया॥उरपेआपुनिहारिकदारी॥थरथरकां
पैंमुधिनसंभारी॥आरतिपरीभूमिभयउरतें॥करजुगजोरि

श्री वा ६४

विनय विस्तरतें ॥ अरु विनतें जल परयो सुज वही ॥ मारेनां द्रि

जोउ में अव वही ॥ दोहा ॥ तुम सव लेऊ संभारि अव हौं जाऊं श्री द्विका

ल ॥ आपु पधारे आगरे श्री व्रजराज उताल ॥ सोरठा ॥ कही जा

य सव वात नरपति श्री व्रजराज जू ॥ सुनि कहि रहु मो पास उ

हां कवहु जै हो नहीं ॥ १३४ ॥ चौपाई ॥ इन सव अपुनें साथ वुला

यो ॥ करी सेव प्रभु मन सुख पायो ॥ श्री दामोदर जू तव आए ॥ सव

वहु वे दिन कों दरसाए ॥ आए सव परिकर हू सेवक ॥ ऊ ते नाथ

के जे पद सेवक ॥ दरषे श्री गिरिधर सव देखी ॥ गंगावाई कों प्र

भु पेषी ॥ कह्यो आपु श्री मुखगिरिराई ॥ उनकी सेवा मोहि न सु

हाई ॥ मानी कान वडि उन की हम नें ॥ तातें सेवन दीनों उन नें

श्री दामोदर श्री वल्लभ जू ॥ वालक स श्री प्रभु गुल्ल भज ॥ एसव

मिलिसिंगारधराए॥तवहिंश्रलोकिकदरससिषाए॥सवननि
रषिकैंअतिसुखपायौ॥श्रीगिरिधरमनअतिसुखदायौ॥दोहा॥
रहेआपुअतिसुखसहितकछसपुरामेंधाय॥चातुरमासवितीत
करिधारदऊतीभाय॥२३५॥सोरठा॥निरषतवउजीधाररहेहर
षिश्रीगिरिधरए॥सुंदरअधिकसुदेसश्रीमुखसोंआयसकहे॥
॥२३६॥चौपाई॥श्रीमुखआयसकह्योसुनाई॥गंगावाईसोंप्रभुभा
ई॥चलोंरह्यांतेअनतपधारें॥अवनहिंरहेंचलोमगपारें॥आर
सदेरथमांहिविराजे॥विजयकीएसवसुखनसमाजे॥भाईतीन
श्रीगोविंदरायो॥करैंसेवप्रभुनिजकरिभायो॥एकपधारेंउरा
लेकैं॥दूसररसवपरिकरहूंधकैं॥वेआगेउरालगवावें॥एलेपरि
करसंगसिधावें॥वालभोगीयाअवररसोइआ॥सवसमानकछुअरू
जलघरीया॥करिसामानउप्यापनकीसव॥धरेंरतनहीआपुआ

श्री
वा
६७

इतव ॥ दोहा ॥ राजभोगआरोगकैं विजयकरैं प्रभुआपु ॥ जवल्ह
दिनघडीछैरहे उरादाखिलयापु ॥ सोरठा ॥ उत्हाउथापनहोइ
संऊयाभोगसुसैनसव ॥ याविधिनितप्रतिमोइआपुतुरततही पो
ढिरहि ॥ २७६ ॥ चौपाई ॥ उठतहिं मंगलभोगलगावें ॥ स्नानादि
कसिंगारधरावें ॥ गोपीवल्लभराजभोगधरि ॥ लै प्रसादसवपरि
करसुखकारि ॥ श्रीवल्लभजूउरालेकैं ॥ चलेंतुरततहीनितमगचैकैं
श्रीगोविंदजूघोडाचढिकैं ॥ आगेचलैंआपुढूवढिकैं ॥ लेपरिकर
सामानभोगकी ॥ जायतयारीकरैंजोगकी ॥ घोडापैश्रीवालक
सजू ॥ पढिरैंकवचसुधारिध्वसजू ॥ बांधपांचांसस्त्रसाजिकैं ॥
चलेंपिछाडीसिखरराजकैं ॥ दरसननहोतनाहिंवतरावें ॥ यावि
धिमारगमैं प्रभुधावें ॥ दोहा ॥ कोऊआवेदरसकोंराजाप्रजा ॥

सुभाय॥वस्तुरहमारीरथधरीकहें श्रीगोविंदराय॥सोरठा॥श्री
गिरिवरधररायसदाविराजेगिरिसिखर॥याविधिकहिसमु
झायनांहिकरांवेदरसप्रभु॥२३१॥चौपाई॥संवतसत्रहसैछ
बीसा॥आस्वनपूर्णमाभृगुदिनमीसा॥नखतअस्विनीश्रीगिरि
धीसा॥उठेमानिरच्छाजगदीसा॥चलततउगरभक्तनसुखकर्ता
रहेअवनिपावनसवभर्ता॥संवतसत्रहसौआठाई॥फागुनकृ
ष्णसप्तमीभाई॥वारसनिस्चरनषतस्वातिमें॥पाटविराजेआसि
हाउमें॥तीसमाससमारगसुखसाजे॥जहंजहांइच्छातहंतहंआ
जे॥रथलीमांझविराजेदेवा॥करीआपुश्रीवल्लभसेवा॥सामग्री
अरुकरीरसोई॥साकफलनकीकरनिजजोई॥दोहा॥वाल
भोगअनसखडिसवदूधदहीकीसेव॥यहनिजकरनप्रमोदसों
वालकृष्णश्रीदेव॥सोरठा॥वकुवेदीमिलिसाथकरेंसवश्रीगिरि

श्री
वा
६६

धरण॥ गाय रहैं निज नाथ दधि माखन अपुनें सदा॥ १७८॥ चौ
पाई॥ धारदं औती प्रभु विसराए॥ कोटा बूंदी कों अब आए॥ अनुरु
ध सिंह हाडा हो वां को॥ अभिलाषा दरसन की जां को॥ वे सब
जानें नाथ आपु को॥ करवायो प्रभु दरस नाथ को॥ करी दंडौत
हाथ जुग जोरी॥ सुनें नाथ इक विनती मोरी॥ हौं निज दास ना
थ अपुनायो॥ प्रभु को दरस दास दरसायो॥ विनय करी हों प्रभु
पद भायो॥ आपु करो श्री गोविंद रायो॥ नाथ रहो मो मुलक विरा
जै॥ जहां हो यमन न सुख सब छाजै॥ हाउ आपां च हुजा रसदारई॥ र
हैं जु हो यम ले छल मारई॥ दोहा॥ सुनि श्री गोविंद राय जू कहीता
हि सों वात॥ तुमरी वे सब ता भली रहे तुम्हारे गात॥ सोरठा॥ अ
ब तो चातुरमास रहैं जहां आपुन खुसी॥ तापाछे जो वात जहां र

हैं प्रभु जाय कें ॥१३५॥ चौपाई ॥ सदा विराजे सो नहि होई ॥ चोरी
ज मा साथ तु म जो ई ॥ यह कहि कें स मु झा यो वा कों ॥ क रो सेव तु
म जो व नि जा कों ॥ आपु विराजे करु स विला सा ॥ कुतो गा म इ क मु-
लक सु पा सा ॥ पद्म सिला ही ता पै छाजे ॥ मा स चतु र श्री जी सु ख
साजे ॥ करि वि ती त इच्छा पग धा रे ॥ पुष्कर होत जो ध पुर पा रे ॥
चारि कोस पै पुष्कर होई ॥ त हां जाय र थ अ ट क्यो सोई ॥ तब पू
छे श्री गो विं द रा या ॥ गं गा बा ई प्र भु सों भा या ॥ बाई प्रभु सों पू छी
जाई ॥ क्यों अ ट क्यो र थ प्र भु न अ या ई ॥ ले उं व ले या क हो का ज
सों ॥ हंसि बो ले कमल न सु वा स सों ॥ दोहा ॥ कोस चारि पै हैं कम
ल मो कों आ व त वा स ॥ फूले पुष्कर मां ऊ सो मा हि त ला वा ता स
॥ सोरठा ॥ ज ब अ आ वे गे फूल ले सु गं ध त व ही च लौं ॥ इच्छा मा जं है

श्री
वा०
६७

हीयतहां विराजें जायकें ॥ ५४० ॥ चौपाई ॥ सुनततपछाए तहां ब्र
जवासी ॥ गए धायजहं कमलनरासी ॥ देखे जायकमलवहू
फूले ॥ लिए तोरि उनविनकी मूले ॥ लालस्वेत सवरंगकेजाई
बांधे पातनधरिकें सांई ॥ चलेतहां तें मारगलीने ॥ पातनछां
पि प्रभुनसवदीने ॥ आए तुरत धाइकें ओही ॥ ठडे पासरथआ
यजु सोही ॥ तव लीने श्री गोविंदराया ॥ धरें नायपदजुगकं
रि भाया ॥ यहं आए सव आयसुदेवा ॥ तातें सव मिलिकरों सु
सेवा ॥ श्री वल्लभजू आय पधारे ॥ श्री मदवालकृष्ण करसारे ॥
वालकश्री दामोदरराया ॥ इनहूं आय धराए भाया ॥ दोहा ॥ मि
लि वहू वेटी आय सव कमल धराए नाथ ॥ सवही परिकरलय
कमल धरे सव न मन साथ ॥ सोरठा ॥ अति सय करि प्रिय

एऊजेयमेंगाएआपुप्रभु॥लैसुगंधसुखपायदरसाएप्रियक
मलसब॥१४१॥चौपाई॥अबकछुकहौंचरितगिरिधरका॥चलें
तहांतेंनिजसुखसरका॥रूपसिंहराजावडभागी॥परमभगव
दीप्रभुपदपागी॥श्रीगोस्वामिनसेवकहोई॥कृसगठकोराजा।
सोई॥देसपतीसोंलरिकैंवाह॥तजीदेहमानुषकीजाह॥दोउ
तदेहधुगधुगीदीनी॥हुतीसुहीराजिंहिमधिकीनी॥नाऊहो
रकताहिखवासा॥वाकेकरदीनीजुसुपासा॥याकोंलेकेदीजो
जाई॥गिरिवरपैश्रीगिरिधरराई॥वानेजायप्रभुनकेआगे॥ध
रीजायकरिप्रीतिसभागे॥करिदरसनजबगिरितेंआयो॥सि
लाइऊँतीकेढिगजायो॥दोहा॥रूपसिंहराजातवैंदरसेउही
खवास॥मुद्रातिलकनकेसहितकेसरिवसनप्रकास॥सोरठा
॥लौकिकतनुरणत्यागिभगवदतेजप्रतापजुत॥निजमंदिर

श्री
वा
६८

मैंजातसवदिननिरखेप्रेमतें॥५८॥चौपाई॥निकसतनांही
देखेकिनहू॥लीनभएप्रभुमानीविनहू॥अवरनसुतकीकथा
वषानें॥परमभगवदीयाहिप्रमानें॥इनजबसुनीनाथकी
आवन॥हरष्योमननमैंअतिहीचावन॥हैहमरेकुलइष्टस-
दातें॥परसोंप्रभुकेपदरजकदातें॥सुनतउठ्योप्रभुकेपदनिर-
षन॥विनुदरसनक्योंअनजलभरषन॥आएहमरेदेसमांझ
अव॥चल्योदरसहिततजिसमाजसव॥मिल्योआयजाकेव-
नमांही॥ऊतोगामअजभीतजहांही॥तहांसरोवरइकहेसुंद-
र॥नदीपासततहूरूरनामंदिर॥ठाढोहुतोतहांरघुदेष्यो॥भयो
प्रसन्ननाथमैंपेष्यो॥दोहा॥जान्यांवैसवताहिप्रभुदरसदि-
ख्यायैनाथ॥प्रगटअवनिपैम्लेछसवबाविनयकसीतिहिसा

य ॥ सोरठा ॥ गुरु विराजो आपु मुलकदास के प्रभु जहां ॥ रुक्मनि
जही मानि करैं सेव जिहि वनि सकै ॥ ५३ ॥ चौपाई ॥ सुनि विनती
श्रीगोविंदराया ॥ कहीजाय वाईकुं रिदाया ॥ पूछोजाय लाल गिरि
धरसें ॥ वाई कहीसकल सुखसरसें ॥ सुनि हंसि बोले श्री गिरिधा
री ॥ पहर मणीक भूमि अति भारी ॥ परवत सव सुंदर ही सोहें ॥ ताक
फूलवऊ मोमन न मोहैं ॥ तातें रहों वसंत ऋतु लों ही ॥ पाछें देषो जाय
कहां ही ॥ नाहि न रहें सदा रहियाना ॥ तातें करो ओलको वाना
रहे तहां प्रभु ओलरुलाए ॥ ग्रीषम रितु कछु सुख तहं पाए ॥ मार
वाउ पाछे पगधारे ॥ चले तहां ते पंथ निहारे ॥ दोहा ॥ जोधपुरा
के वरेहीऊ तो विसलपुर गाम ॥ द्वै वैरागी हुते तहं गुरु चेला अभि
राम ॥ सोरठा ॥ जव हि विराजत नाथ गोवर्द्धन के सिखर पै ॥ तव व
ह चाल ही साथ श्री गंगा के न्हान कों ॥ ५४ ॥ चौपाई ॥ न्हाय तहां

तें

श्री
वा
६५

आए सो ऊ॥ रहि गिरिराज तरैहटी दोऊ॥ गुरु नें जाय नाथ मुख
देख्यो॥ भयो प्रसन्न जनम फल पेख्यो॥ चेला सन उहि कह्यो सु
नाई॥ निरखे मैं श्री गिरिधरजाई॥ करुणा कहो श्री मुख की सोभा
निरखे आजु जनम फल जोभा॥ तातें तू करि दरसन देवा॥ जो
चाहे करुहु तुम फल सेवा॥ सुनत उठी चेला अभिलाषा॥ निरषों
में हूं यह मन राषा॥ चल्यो तहां तें उठि कै धाई॥ जब पहुंच्यो गि
रिवर पद जाई॥ सुरत भई तहु श्री मुख गाई॥ तब वह अटक्यो
न लहि पद जाई॥ दोहा॥ श्री भागवत रूप पच्यो लोक रीह्रदय वी
चारि॥ शैलो सिय यह पद तल्लोक रेपा ताहि निरधारि॥ सोरठा॥
श्री गिरिधर को रूप दरसन श्री गिरिराज जू॥ तातें क्योंकरि
जाउ रनपै पगधरत तो जु मैं॥ २४५॥ चौपाई॥ यह कहि कैं

पाछे फिरि जावे ॥ नहि पद परे आपुस कुचावे ॥ जब वे ठेउ या
मैं जाई ॥ भटकै दरसन को मन न आई ॥ फिरि उठि आ वै दरसन
भावा ॥ जब निरखै गिरिराज सुहावा ॥ वही आय या के मन
मांही ॥ फिरि हटि जावे रहे तहांही ॥ या विधि आमित वार उ
हि आयो ॥ तिसे इन्द्र पुनि सदन सिधायो ॥ यह मन में निश्चय
निरधारी ॥ हो नहि जाउ अब पुन पद धारी ॥ जब मोहि दरसन
इह थल होवे ॥ तब ही सुख सां श्री मुख गोवे ॥ गुरु वाको दरसन.
करि आवे ॥ चेला तहं वैठो पछितावे ॥ दोहा ॥ नित प्रति वाको गु
रू उहि कहि समुझावे चाव ॥ याके मन में वह सदा रहे छाव उ
हि भाव ॥ सोरठा ॥ श्री गिरिवर धनार्थ गिरिवर रूप समान
प्र मुहों कैसे के जाउ पद धरि प्रभु के गात में ॥ २४६ ॥ चौपाई ॥ आ

श्री
वा
७०

रतनरहेसदामननमांही॥पनकरिवैठारहेतहांही॥गुरुचेला
दोऊइकठांही॥रहिगिरिराजततैंटीमांही॥रहितरहितकछु
कालभयोजव॥गुरुपदपायोयहतनुतजितव॥चेलपीछे
उठिकैआयो॥वासिलपुरमहंतपदपायो॥एकमजलजवर
ह्यारहाते॥सदारेवदमनदरसतहांते॥सपनेमांझनाथवपु
दरस्यो॥गयारेवदतववहमनहरस्या॥श्रीमुखकह्योयाहिन
हिनिरख्यो॥सोमेंआयोतूलेपरख्यो॥कालिहिआउगोपेउतेर॥
परिहोरथकेपैंडेमेरे॥दोहा॥करिहौविनतीआयकेंश्रीगोस्वा
मिनसाथ॥दरसाओश्रीनाथहमविननहिंरोओपाथ॥सोर
ठा॥जवनहितोहिदिखायतवकहिहोअंगारमम॥सुतपिछो
रापागमातिनमंषनरथधरो॥२४७॥चौपाई॥हैंरथमेंश्रीना

थ्या नाथ्या ॥ मोहि दरसाओ करुणासाथ्या ॥ इक पट्टा लेह्यौ व निवा
ई ॥ राज भोग के हित धराई ॥ आवत लेह्यौ संग लिवाई ॥ वा कों धरी
यौ आगे आई ॥ राज भोग सब दिन वाही पै ॥ सुख ही अरोगें गो
ताही पै ॥ यह सब आय समय नें मांही ॥ कही नाथ निज सुख उ
हि मांही ॥ उठ्या विरागी प्रात उहां ही ॥ वट ई लाइ बुलाया वांही ॥
वासों कही विरागी ऐसें ॥ मैं सपची सन में इक जैसें ॥ दें उ ता कों
पट्टा व निजव ॥ पहिर एक मधि गठि लायो तव ॥ दोहा ॥ उठ्या वि
रागी तवै उहि पट्टा लीनों साथ ॥ आय परयो मग में जवैं इत तें न प
धारे नाथ ॥ सोरठा ॥ पहिर पाघि लीजा निदरस्या प्रभु कौ रथ
रथ जवैं ॥ इत तनें सब वही आय परयो विरागी पंथ में ॥ २४८ ॥ चौपाई ॥
उठि वे कों उहि सब वही भाष्यो ॥ नांहिन उठों ताहि यह आष्यो ॥

श्री
वा
७२

जब मोकों गिरिनाथ दिखावै ॥ तब हिं उठि कैं सब सुख पावै ॥ इन
सब के मन या विधि भाई ॥ है नर नरपति को दुखदाई ॥ इन ही को
ह्यो उन्हां श्री गिरिधर ॥ रहैं सदा गिरिवर के ऊपर ॥ या रथ में है वस्तु
भाव हम ॥ सो कैंया दरसें घर की हम नतुम ॥ तब वाने सब कही जोरि
कर ॥ जा विधि सपने आय स गिरिधर ॥ मो कों कही पादीया लै ह्यो ॥
हमरो सब सिंगार वते ह्यो ॥ स्वेत पाग अरु स्वेत पिछौरा ॥ मोतिन के
सब भूषन औरा ॥ दोहा ॥ सुनि वासें शृंगार सब श्रीमद् गोविंदराय
जान्यो है यह अनुभवी वैरागी सत भाय ॥ सोरठा ॥ वेस वजान्यो ॥
आपु कही दरस की चाहि सों ॥ सब ही कह्यो सुनाय उत्थापन प्रभु को र
ह्यो ॥ १४८ ॥ चौपाई ॥ तब ही उरा भये तहां ही ॥ उत्थापन को साज
जहां ही ॥ दरसन करे विरागी सुख सों ॥ गयो सकल संताप वि
मुख जो ॥ भाग सैन सब भीतर हि भए ॥ सुख सों प्रभु जू पौढत हए

मंगलतेंसवराजभागलगि॥वाहीगामविराजेसुखसंगि॥करयोम
नोरथवाकोपूरा॥लीयागछायविरागीरूरा॥नगरजोधपुरआपु
पधारे॥करिविचारपद्दाकिंहिकारे॥घनेहतेसुंदरअतिसंगमें॥य
हकिंहिकाजतजोयामगमें॥अवयापद्दाविनकछुअटक्या॥तातें
वाकोंवाहीपटक्या॥याकोंलेहिविरागीआई॥यहकहिकेसवच
लेविहाई॥दोहा॥पाछेतेंआयोउहीजानिपधारेनाथ॥वहपद्दा
देख्यातहांलीयोउठाईमाथ॥सोरठा॥मनमेंभयोउदासमाकों
तोआयसदई॥तातेंहौंगढवायपरयोकहाकारणभयो॥१५०॥चौ
पाई॥यहचिंतायाकेमनधाई॥मोसेवानहिप्रभुनसुहाई॥यावि
धिचिंताकरतगयोघर॥पद्दाराख्योउत्तमविधिधर॥अतिसयखे
दकरतमनमांही॥बैठ्योजायकरतदुखजांही॥अवहौंकहोंप्रभु
नकीकरूणा॥तीनकोसमगचलेसुसरणा॥अटक्यारथमगमेंसु

खवारी॥ करेउपाय अमित उहिठांई॥ नाहिन चल्यो नाथको रथ
जब॥ आयसवाईकों श्रीमुख तब॥ पूछ्यो जाय नाथसों कारण॥ क्यों
अटक्यो रथ याहि उजारण॥ कोसकोस लग गाम नदी से॥ जल घा
यानहि याथ रही से॥ दोहा॥ श्रीमुख श्रीगोविंद जू वाई कह्यो बुलाय
पूछ्यो गिरिधरलाल सों कारण कवन रूकाय॥ सोरठा॥ गंगाबाई॥
जाय करी बेनती नाथ सों॥ लेउं कवलैया आपु कहो नाथ कारण कव
न॥ १५१॥ चौपाई॥ हंसि बोले श्रीगिरिधरराया॥ हम वन वायो पहा
माया॥ आयस है वैरागी सों हम॥ राज भोग के हेत सा जन्म॥ नित
तुमको सुख होतो ता तापै॥ रंच होत ही बिन ही जापै॥ हमरी आयस ध
रि वह लायो॥ तुम बहु कोव ह नाहिन भायो॥ तुमने पटक्यो क्यों वह
धारी॥ नांहि चलौं जौलौं न हि आई॥ बाने प्रीतिगठायो वाकों॥ लेउ
म गाय पठाय सुता कों॥ यह आयस वाईको भाषी॥ गंगाबाई अ

भु सों आय सन्मुख भयो॥ मुनि मन नें बहुत ताप सु राखी॥ हम वाकों क्यों आए नारवी॥ वारं प्रभु सों कह्यो बुझाई॥ तुम वाकों क्यों दयो बिराई॥ वा पहाड़ प्र भु नें बन वायो॥ तबै गठाय विरागी लायो॥ जो लों नहिं घर में प्रभु जा नी॥ तो लौं राज भोग उह आनी॥ दोहा॥ यह आयस प्रभु की सुनी मा न में पश्चाताप॥ कह्यो श्री गोविंद राय जू हम कैं पाप कैं आप॥ सो रठा॥ तब हिं पठाए आप दै ब्रजवासी लेन कों॥ घेरा चाढि कें जाउ पहा ला आसी सधरि॥ १६४॥ चौपाई॥ जो पहाड़ वहु मिलै तहां ते॥ ओ ह्यो धै कें लेय उहां ते॥ जो नहिं मिलै तहां ते सो ऊ॥ कही ह्यो वा सों ले जे आऊ॥ जो नहिं होवे ता पै सो ई॥ अवर न यो बनवा दे जो ई॥ कहि ह्यो वा सों तुम व उभागी॥ जाकी सेवा प्रभु अनुरागी॥ मुनि आयस धरि सिर पै सो ई॥ च ले धाय कैं आए जो ई॥ देख्या पहाड़ तहं नहिं पायो॥ ढूंढत डोलत बाघ र धायो॥ देख्यो जाय विरागी सो ई॥ वै ठ्यो चिंता करै तो सो ई॥ इन दो

श्री उनको देखत हरखैया ॥ अपुनें भाग कहुक हीय रखैया ॥ दोहा ॥ तुम
वा बउ भागी कहैं। इन श्री गोवर्द्धननाथ ॥ जाकी सेवा सुधि करी श्री मु-
७३ खअपुने साथ ॥ सोरठा ॥ जो वह तुम पै होय नातर देऊ गवायअ-
व ॥ सुनि मन हरखे यों आपु तुरत दयो सुख मानि कें ॥ १५३ ॥ चौपा
ई ॥ तब हीं पद गले ब्रजवासी ॥ आए धाय जहां सुखरासी ॥ ले कर-
श्रीमद गोविंद राया ॥ धरि माथे आखिन सों लाया ॥ सब मिलि मा
थे आंखिन लायो ॥ धरेयो जा पत्ता करि उहि भाया ॥ पद्दा कों सब दि
न धरि लावें ॥ करें जा पत्ता भाग धरावें ॥ सब दिन सुधि करि कें स
व राखें ॥ नाहि न फिरि वह होय सु भाषें ॥ जहां तांइ नहि मंदिर
ब्राजे ॥ राज भाग नित तत्ता पै साजै ॥ या विधि लीला सभि नदि
खाई ॥ अंगीकार अपुन गिरिराई ॥ चलत चलत मग सुखस

नेआए ॥ याविधिप्रभुजोधपुरह्याए ॥ दोहा ॥ जसवंतसिंहराजाहु-
तेवेनहिंतहंउहिवार ॥ गयोऊतोननसारमेंगिरिकमाउकीधार
॥ सोरठा ॥ आएसवकमदारमिलिश्रीगोविंदरायपद ॥ विनयकरी
बहुवारिअठेविराजोकृपानिधि ॥ १५४ ॥ चौपाई ॥ लिखेंवधाईसव
मिलिअवहीं ॥ सुनतआइराजाजीतवहीं ॥ याविधिविनयकरीसु
खदैनी ॥ आपुविराजेचांपासैनी ॥ तीनकोसपैगामरहुतोवहु ॥ आ
इपधारेश्रीगिरिधरजहु ॥ तहांकदमखंडीइकहोई ॥ प्रभुनसुहा
ईअतिसयसोई ॥ गामकुंवरऊपरमसुखदाई ॥ मासचारितहंरहि
सुखपाई ॥ जवतेंउठेआपुगिरिवरसों ॥ मासचतुरतीनोंभइउर-
सों ॥ कृसपुरामेंप्रथमहिभयो ॥ धारदंऊतीदूसरगयो ॥ कृसविला-
सगामजहंहोई ॥ तीसरचांपासैनीसोई ॥ दोहा ॥ चौथोजायमिवाउ-
मेंमंदिरअपुनोंछाय ॥ जायविराजेगिरिधरणसवपरिकरगहुपा

य ॥ सोरठा ॥ संवत्सै सो छ्वीस आश्विन पून्यो पागिरि तजे ॥ संवत्सै सो
ठाईस फागुन कृष्ण सप्तमी ॥ २७७ ॥ चौपाई ॥ तीस मास लौं श्री गिरि
धारी ॥ गिरिवर तें मेवाड निहारी ॥ इत नैं देस कृतारथ कीनैं ॥ सब
हिन कों सब विधि सुख दीनैं ॥ हिंदुस्तान दूं जौ तीधारा ॥ कोटा बूंदी
सब सुख सारा ॥ देस ढुंढार हि मारवाड कों ॥ डुंगरपुर अरु वांसवाड
कौं ॥ साहपुरा के बीच रह्यौ लौं ॥ रथ हि बिराजे आपु तहां लौं ॥ दिन स
त चालीस रथ हि बिराजे ॥ उरा चातुरमास न साजे ॥ चांपासेनी आपु प
धारे ॥ श्री गोविंद मिवाड पधारे ॥ उदयपुरा कौ राय सिंह राणा ॥ मिले
आय राणा सुख खाणा ॥ दोहा ॥ करी दंडवत आय तिहि धर्यो नाथ
कर सीस ॥ वैठ्यो कर जुग जोरि कैं प्रभु न निहारत ईस ॥ सोरठा ॥
कर्यो अनुग्रह नाथ पावन कीनों दास कों ॥ सेवा की मो वास देऊ
नाथ प्रपन्ना रकैं ॥ २७८ ॥ चौपाई ॥ हंसि बोले श्री गोविंदराया

तुम पै करी श्री गिरिधर राया॥ गिरिवर तें उठि आपु पधारे॥ गोरह
न कों हेत निहारे॥ अब वहिं विराजे चौपासैनी॥ दैसपती के दुख न वि
हैनी॥ जो तुम सों वैर राखे जाई॥ तब हम लेप धरावें आई॥ कहो विचार
जाय कै घर में॥ कह्यो आय तुम हम सों उर में॥ करि दंडवत घर मे^
वह गह्यो॥ जाय माय सों सब कछु कह्यो॥ श्रीजी ब्रज के ठाकुर जोई॥
मारवाउ में आए सोई॥ उन पठए श्री गोविंद राया॥ आए हम पै करि
कैं दाया॥ दोहा॥ जे सुनि है वह यवन तव चढि आवे गोधाय॥ हम^
कूं मारि वहाइ है तातें कछु न वसाय॥ सोरठा॥ सुनी माय उहि बा
त रिसि कैं वालीत तनुज कों॥ कौ लों जीयों तात यह तनु काहू का^
ज नहिं॥ १५॥ छंद॥ सुनो कहों मैं बात तात मन न धरि कैं मेरी॥ यह
तनु है किहिं काज परे गोइ कहिं न ठरी॥ तुम कुल भए सपूत सूत ता^
व उ तिन की दाया॥ हौर रारि उरधार मरो तो सुख सब पाया॥ रहे ना

श्री
वा
७५

मजगमांऊसुनेंजेसुतन्हिकल्हानी॥कहेंलोगसववातमरेहैधर्म
मल्हानी॥देवगुरूनकेल्हेतदेतनन्हितनुकिंन्हिराषा॥तातेंकसोसु
धारसकलतुमसेंामेंभाषा॥परेंग्आयजवजुद्दकरेंसवल्हीवेसाथा
तातेंवेगन्हिकल्हेजायपधरावेंनाथा॥वेंग्आएइन्हिदेसनांन्हिकहु
न्हमरेभागा॥ग्रवजकुंवरकेल्हेतग्रवरमीरांकेरागा॥दोहा॥या
विधिसेंारानीसकलकह्योतनुजसमुझाय॥तवराणांन्हरष्योसु
नतनायमाथपदमाय॥सोरठा॥उठ्योग्आयकरजोरिविनय
करीप्रभुंकमल॥पधरावोनिजनायवेगन्हिंग्आपुपधारिके॥१५८

पद
॥चोपाई॥विनयसुनतप्रभुजूमुसिकाए॥तुमवालकयल्हकवन
सिषाए॥तवराणांकरिविनयजुग्आऊ॥कल्हीमायसोंन्हिपठएसो
ऊ॥नान्हिनन्हमरेभागपधारे॥ग्रवजकुंवरमीरांसुखसारे॥

मरिहौवेदाधरनीछितसौं॥तुमरजपूतलरतहौचितसौं॥अव·
तौदेवगुरूनकेकाजा॥यहअनित्यसुखतजौकुराजा॥भोगोजा
यअचलसुखसाजा॥जीवतरहौजगतजसछाजा॥वेकरिहैंतुम·
रीसबरछा॥यातेंनाहिनअवरजुअछा॥यहमातामोहिकह्यो
वषानी॥प्रभुपदकमलमांझसुखमानी॥दोहा॥सुनतनाथहर
षेवचनकरोसकलतुमराज॥करिहैनाथसहायसवतुमरेम·
नकेकाज॥सोरठा॥दइअसीसतवरावचांपासैनीप्रभुचले॥सु·
खसौंपंथविहायदरसेश्रीगिरिवरधरण॥१५८॥चौपाई॥गंगा
वाईप्रभुनसुनाई॥भईसकलजोतहंप्रभुभाई॥विनतीकरोजा
यतुममोरी॥आयसजोमुनिकरैंवहोरी॥कह्योआयसवमासौं
सोई॥वाईसुनततनिवेष्टीजोई॥श्रीमुखजाश्रीगोविंदभाषी॥सु·
निआयसश्रीमुखयहभाषी॥देसमिवाउचलूंगोजवलौं॥अन्न

श्री
वा
७६

कूटकोंकरिदैंतबही॥यहमुनिआयसभाषीआई॥भएप्रसन्न
सकलसुखपाई॥अन्नकूटकोउत्सवभयो॥अतिहीसुखप्रभुस बस
नदयो॥याविधिसेवासबदिनहोई॥एपाकोदिनआयोसोई॥
॥दोहा॥विजयकीएवाहीदिनाराजभागसुखसाथ॥गामएकमा
रगहुतोभयोउथापननाथ॥सोरठा॥भईतहांसबसेवपुष्कल
जलसुतलावतहं॥जलहुअरोगेआपुवादिनवाहीतालको॥१६०
॥चौपाई॥रहितलावकेपासरातिकों॥अर्द्धनिसाजबभईप्रातसों
जयजयकारसबदधुनिहोई॥सबदसुनैंनहिदेखैसोई॥सबलो
गनयहअचरजमाना॥भयोकहायहकछुनहिजाना॥मिलि
सबगएतलावजहांही॥जयजयधुनिसोंपूरमहांही॥काहूइ
कनेजायपकारेवो॥कारनकवनकहोजुविचारयो॥सुनत

कानकछुदीसतनाहीं॥ तुमलोकवनकरतकछुयाहीं॥ रहेअग्र
कासआयकैंचोल्यो॥ रहे तलावलाखइकठोल्यो॥ भक्तजनमध
रिरहेइहांहीं॥ श्रीजीआयविराजेजांहीं॥ दोहा॥ पानीयाकोप्र
भुपीयाहमसवचढेविमान॥ तजीदेहभक्तनसवैकरतनाथ॥
गुनगान॥ सोरठा॥ सवदिननदीनेंधामसुरपतिकेसवसाथहीं॥
नाथकृपाउरधारिकरतसवैजयजयधुनी॥ १६२॥ चौपाई॥ वर्ष
हजाररहेहमयापै॥ अवभईमुक्तिजाहिहमजापै॥ आएहमकों
कृतधनीके॥ चढेविमाननजाहिअनीके॥ वैकुंठपतिकेलोकमहां
हीं॥ चलेजाहिहमसवतहवांहीं॥ सुनियहवातसकलव्रजवासी॥
श्रीगोस्वामिनवंसिसुधासी॥ मानतभएसकलमनमांहीं॥ यहकृ
छुप्रभुकेअचरजनांहीं॥ आधरातिसोंप्रातजुभाई॥ मंगलआरत्ति
जहंलगिआई॥ एसेइनितप्रतिचरितमहाना॥ करतजांहिनित

श्री
वा
७७

नवगुनखाना॥चलतमजलस्रुपुनेमुखसाने॥चालिससातदि
वसमधिमाने॥दोहा॥कीएचरित्रविचित्रप्रभुसवनहिव रनेजो
हि॥तातेंजेजेमुख्यहेलिखग्रंथवढिनाहि॥सोरठा॥आएआपुसि
हाउरकपीपरतरिरथअडेयो॥पूछेयोप्रभुसोंजायगंगावाईजोरि
२ क॥१६४॥चौपाई॥कारनकवननाथजहअटके॥चलतचलतम
गमुखसोंअटके॥हसिवोलेश्रीमुखगिरिधारी॥सुनोकहोंजाआ
यससारी॥अवजकुंवरकोथलइहिहोई॥रहोंग्रामेंमंदिरसोई
रहोंहमारोमंदिरवनिहे॥जहहोंरहोंसकलसुखसनिहे॥अव
ऊमनोरथराणाकरिहे॥रहोंउदयपुरकछुदिनवरिहे॥पाछेमं
दिररहोंकरांउं॥रहोंकालवहुवर्षसरांउं॥अनोहाइरजकीमाहि
दीसे॥यहपरवतमोकोंप्रियजीसे॥यहांसमीतुमघरखवनवे

हो॥ श्रीगोस्वामिन वैठक छैहो॥ दोहा॥ याविधिआयसमकल
प्रभुकहीआपुसुखपाय॥ गंगावाईजोरिकरकरीदंडवत्तधाय॥
सोरठा॥ आयसदईसुनायश्रीमदगोविंदरायसों॥ सुनिहरखेसुख
पायप्रभुकोआग्रममानिकें॥ १६३॥ चौपाई॥ तवहीसकलतयारी
कीनी॥ उत्तालीयोबुलायप्रवीनी॥ श्रीमुखआयसदईसुमंदिर॥ क
रोसकलविधिअतिहीसुंदर॥ वकुतमनुष्यलगाओतुमहू॥ सोप्र
होयसिकरोसुहमहू॥ जायउदयपुरकरैंनिवासा॥ वनवावोमं
दिरसुखरासा॥ याविधिदेआयसप्रभुआपुन॥ विजयकीएसवही
सुखपापन॥ रहेजायमहिलनमधिदेवा॥ भईनाथकीसुखसन
सेवा॥ मंदिरतहांवनायविराजे॥ कालकछुकहीतहंसुखसाजे॥ ए
रणाकरयोमनोरथताको॥ रहेतहांदेसुखसववाको॥ दोहा॥ अव
सवकहोंमिलाउकीमंदिरप्रभुकीवात॥ वनतभयोअतिप्रेमसोप्र

श्री भुआयसधरिगात ॥ सोरठा ॥ लगेअमितन्हीलागप्रेममगनप्र
वा भुसेवमें ॥ सवविधितजिमनसोककरैंसकलन्हीभावसों ॥ १६४ ॥
७८ चौपाई ॥ याविधिवनतभयोसुखदाई ॥ श्रीगोविंदनिहारेंआई ॥
आपुपधारेनिरखनभावा ॥ दिननिसिरहेनाथमनचावा ॥ स
वथलकरिकरिआपुवतावें ॥ जाविधिप्रभुकेमनहीभावें ॥ दे
खिपधारेसेवामांही ॥ आपुविराजेंउदयपुरांही ॥ धरीनीमही
प्रभुनसुधारी ॥ वेदविहितविधिहीसुखकारी ॥ मंगलसवविः
धिकीनेजवही ॥ मंदिरनीमधरीहीतबही ॥ उस्तादासगुपाल
सुजाना ॥ मंदिरकरमकरनसुमहाना ॥ लीयेपषानअमितवाने
सव ॥ धरेजहांपैसोहतजहंजव ॥ दोहा ॥ योरहिमासनमेंसक
लमंदिरवन्योंसुढारि ॥ प्रभुश्रीगोविंदरायतवमुदितभएसुनि

हारि ॥ सोरठा ॥ वैदिक विप्र बुलाय तत्र वहीं कीने कर्म सब ॥ जे है वै
दिक सार याग आदिक बहु विधि कीए ॥ १६७ ॥ चौपाई ॥ करी प्रतिष्ठा
सकल सुहाई ॥ बांचत भए पुण्य दिन भाई ॥ नाना द्विजवर वेद विधा
ना ॥ कीए जाग बहु सब विधि दाना ॥ फागुन वदि सप्तमि शनिवारा
पाट विठारे प्रभुन सुधारा ॥ संवत सत्रह सौ अति पावन ॥ ऊपर अ
ठावीस सुहावन ॥ जा दिन सौं मेवाड विराजे ॥ सकल मनोरथ स
व के साजे ॥ श्री दाऊजी राजा भए ॥ सकल नेग ता ही दिन दए ॥ जे
गिरिवर के ऊपर होई ॥ बांधे ता ही विधि सौं सोई ॥ गाइन हेत खि
रक बनवाए ॥ गाई तिन मधि सब पधराए ॥ दोहा ॥ सब विधि सौं
लडिआवते सब हिं सिंगार धराय ॥ उत्सव सकल महोत्सव बार प
वे दिन भाय ॥ सोरठा ॥ एसे हि करि सब सेव द्वादस वर्ष व्यतीत भए
तब पूछी उहि वात नरपति यवन बुलाय नर ॥ १६६ ॥ चौपाई ॥

श्री हलकारिन सौं एं छीवाता ॥ गिरिवर देव उठे जेता ता ॥ कहां विराजे
वा हैं वे जाई ॥ हम रे राज किरा जिं माई ॥ मुनि आय स वे धाए देखन ॥ न
१५ देस देस मथि गए मुपे खन ॥ मार वाउ हो ओ ती देखी ॥ गए छुछार धा
र सव पेखी ॥ नाहिन देख गिरिधर देवा ॥ आय मिवाउ जहां सुख से
वा ॥ एं छत फिरे लोक सव मांही ॥ आए तहां जहां सुख छांही ॥ हल
कारा निश्चय करि गए ॥ नरपति पै वे सव कहीं धए ॥ जाय कही नर प
ति सौं उ नहीं ॥ हैं मिवाउ वे प्रभु जू भनि ही ॥ कर जुग जोरे राणा रा
हही ॥ सदा रहित सेवन विधि तिं कही ॥ दोहा ॥ मुनि कैं वो ल्यो यव
न वह मैं समुझी यह वात ॥ मोरे मुलक विराज है तजि मो कों नहिं
जात ॥ सोरठा ॥ अव गए मोहि तिआगि चै है मो कों गयो ही ॥ देखां
हौं निज भाय राणां हूं कों जाय कैं ॥१६॥ चौपाई ॥ चल्यो तहां

तैं यवन सु धाई ॥ चलत चलत आयो उदियाचौ ॥ राय सिंह राणा स-
व घरके ॥ पठए जाय मवासे धरके ॥ आपु रह्यो नारेमगरा में ॥ की
नैं उराआ रूधरा में ॥ लीनैं साथ मुलक के नरहीं ॥ हुतो हजार चा
लीको भरहीं ॥ रतनैं पैन रपति हूं आयो ॥ उरावा के परे सुहायो
आपुन सागर राजजहांहीं ॥ रह्यो आय वहां आपु तहांहीं ॥ आगि
रिधर गंगावाई सों ॥ कहे आपु आय सभाई सों ॥ कहो श्री दाऊ जी
सों जाई ॥ हमरे मुख सों कहो सुनाई ॥ दोहा ॥ एक बात ऊगाम है
वाकी नाल सुठार ॥ है सुंदर रमणीक थल रत्नावलि के हार ॥ सो
रठा ॥ मोकों ले के आपु चले तहां से वन करो ॥ है मोरे मन चाव
वापरवत के देखवेंनां ॥ २६८ ॥ चौपाई ॥ केतकि चंपा केवर सोहीं
राय वेल की गंध मन मोहीं ॥ अब सि देखवें नां है हो जाई ॥ ए सब फू

लसहजसुखदाई ॥ वापरवतमेंएकगुफाहै ॥ ऋषीतहांतपत
पतमहांहै ॥ भएहजारनवरसतहांही ॥ मनमेंकरतविचार
जहांही ॥ मोकोंश्रीनंदनंदनआई ॥ दरसदिखावेंनिजवपुभा
ई ॥ जोलोंनहिंदरसावेंमोकों ॥ तौलोंनहितनुत्यागोंसोकों ॥
प्रानचढावेंमध्यकपाला ॥ वैठिरहेतहंजायनकाला ॥ ताहू
कोंदरसनमेंद्वंगो ॥ तीनदिवसलोंजायरहूंगो ॥ दोहा ॥ पाछैंश्री
ऊंगोइहांइततेंनहिनरपतिजाय ॥ रहेराजसागरवहीपाछेंदे
उंउठाय ॥ सोरठा ॥ यहकह्यायसकरिआपुगंगावाईसोंप्रभू ॥ करिदं
उवतसवभावश्रीदामोदरजूतवी ॥ २६५ ॥ चौपाई ॥ कहीसकलप्र
भुकीसुखवानी ॥ गंगावाईविनयवषानी ॥ सुनततत्यारीकीनी
सवही ॥ रथसिधिकरीसुठारसुजवहीं ॥ रथहिंविराजेश्री

जीतवहीं॥विजयकीएवाहीछिनफवहीं॥गामवाटउआपुपधा
रे॥मारगविषमतहांसुखसारे॥जहंनीचाहोरूईविद्यावें॥आजी
सुखसेंआयसिधावें॥याविधिसोसुखसहितविराजे॥तीनदिव·
सतहंसवसुखसाजे॥निरखतपरवतफूलनकोंही॥सेवसभी
सवससमयसुजाही॥भागसमयजवखुलेकिवारा॥आयेवहउ
ठिगुहामझारा॥रूपविरागीकोवहधारे॥तहांआयगिरिधर
णनिहारे।करीदंउवतआवतआही॥नीलकमलमालातिहि
पोही॥दोहा॥धरनीपैवहहोतनहिलायोस्वर्गनिहारि॥हत्ती॥
गम्यवाकीतहांगंधीकरनसुधारि॥सोरठा॥सिद्धहत्तीकरमा·
लस्रीमुखवाकोंवोलिकें।पहिरावेंतुमआपुआगेआयसुधारिकें
॥८०॥चौपाई॥सिद्धिकरीहीवानेंआगे॥आवेगेमेंधरेंसुरागे॥तब
वानेंमालापहिराई॥चंदनमहाएकधराई॥सवासेरकोदहोसुभा

श्री वा ८१

ई॥ अमल मलयगिरि तें बहलाई॥ करी दंडौत पधारयौ वामें॥ दूत
विष्णु के आए जा में॥ लीयौ विमान चढाय वही कों॥ लै बैकुंठ पधा
रे जिन्हि कों॥ पाछें आय सश्रीजी दीनी॥ श्री दामोदर राय प्रवीनी
ग्रीषम ऋतु में चंदन धरिहै॥ या में तें कछु घसि कछु भरि लै॥ जो लौं
रह्यौ धराव तरहे॥ पाछें तें चंदन नहीं दहे॥ दोहा॥ रह्यौ राजसाग
र वही इक दिन उरा पाय॥ दूसरा दिन खिमनौर में नरपति उ॥
राधाय॥ सोरठा॥ हुकम दयौ वह आय मास एक लौं रहुं रहौ॥ वा
गवना बौधाय देखि भालि वा कों चलौ॥ ५१॥ चौपाई॥ सुनी बा
त यह राणां जब ही॥ उरयौ जीव में सो चीत तब ही॥ करी मान नता॥
श्रीगिरिधर की॥ लैर राह नरपति जब घर की॥ भेट करी इक
गाम आपु कों॥ गाम बाटउ में फिरि राति कों॥ करी आपु आय स

वारीसों॥ कहो धायतुमजायआपुसों॥ काल्हसिरहाउउयापन
होई॥ श्रीदामोदरजसों सोई॥ नरपतिजायभाजिकेंआजा॥ त
जिखिमनोरउदयपुरसाजा॥ एकपहिरजवनिसाविहानी॥
निकसेभंवरमंदिरमधिरवानी॥ निकसजगमाहनतेंकारे॥
कोटावधिनहिंगणितीसारे॥ दोहा॥ निजरहंचहातेंआपुप्रभुच
रितसुधारयोनाथ॥ पठएताहिउठावनेंमिसिभंवरनकेसाथ
॥ सोरठा॥ चलेधायखिमनोरवाकेउरामांऊसव॥ चिपटेजाय
अपारनाहितनुसंभरयोजीवकिन॥ ७२॥ छंद॥ चिपटेजुवहस
वजायकेंजवविकलकलमलदलभयो॥ इकएकसनवहअसि
तलागेदुरितदुखसवहीदयो॥ गजवाजिऊंटनरषभखरनर
सवनइकसमलगिपरे॥ भागेपुकारेंगिरतपरतसुतनुसभा

श्री
वा
८२

रनकिंन्हिधरै॥ धांवेंदसोंदिसिजांइ॥ जिंन्हितिंन्हिकटतविकटन
किंन्हिसरै॥ सुरजोइछूटतनन्हिंवनेतवधायनन्हिकरहिंसुखप
रै॥ मगरानभागेगएजितकितनन्हिसयानजुमनधरै॥ यह
भईवातसंभारभलीकोजुहैंहूमकिंन्हिकरै॥ करउंजातिवाजी
धायगजकरउंनरनकीतवगनै॥ विषरैसकलनरनारिदुख
भरकहितनरपतिकोगनै॥ इमिभाजिधाएजितहूपाएनन्हि
निरारैपंथको॥ नन्हिरह्योकोईजीवउन्हिथरनरपतिनकी
संथको॥ दोहा॥ नन्हिंआपसकीखवरकिंन्हियाविधिदएउठाय
जितकितकोंमनन्हीसभीविसरगयेसवधाय॥ सोरठा॥ भाजेस
वंन्हीधायनन्हिंदूसरकीखवरकिन्हि॥ जहंतहंगएपरायजीव·
मात्रसवहीतवै॥ ५३॥ चौपाई॥ याऔसरमेंसवहीगए॥ जहां

जाय जाकों सुख छए ॥ द्वै वेगम नरपति की होई ॥ रंगी चंगी नाम सुसो
ई ॥ उनके संग रहे अस वारा ॥ दस हजार उनआ प्रसुधारा ॥ द्वै वेभ
ली मगरन मांही ॥ आंई राणा फौज जहां ही ॥ राणा जी मुनि यह त
व पाई ॥ द्वै वेगम नरपति की आई ॥ भूली उराह मरे सोई ॥ आयो रा
णा उन पै जोई ॥ मुजरा कीनों उन सों भाई ॥ वहि दिन आजु ते हमरी
गाई ॥ खातर वहु विधि उनकी कीनी ॥ षान पान की सुधि सब लीनी
॥ दोहा ॥ उन दोउ नराणां कह्यो तुम हम मरे भरमाइ ॥ धर्म साथ हम
संग ले देहु जहां नरराइ ॥ सोरठा ॥ हमें देहु पहुचाय तुम नरपति
के सदन में ॥ हम वह संग लिवाय जां दिष्य वी तुम मुलक तें ॥ ७४ ॥
चौपाई ॥ तव ही राणा संग तिंहि दीने ॥ दस हजार अस वार हुली
नें ॥ जाहु पुचाउ इन्है तुम उरा ॥ हो इ जहां नरपति इहि वेरा ॥ दी

श्री
वा
८३

एगामदसराएांजीउनि॥कपराष्टेतुदीएतववरुननि॥जायउद
यपुरपहुंचीओऊ॥ष्टतेततलावपाधिलेसोऊ॥देख्योनरपतिसष्टि
रजुउजआ॥देससकलष्टउजआपुजआ॥वास्तिनकेनरभाजेम
गरा॥गएजष्ठांपाएसुखसगरा॥नरपतिअन्लनखायोअध
दिन॥कहोात्तवेयरुवचनसुतरुंघिन॥रंगीचंगीजोलैंपाऊं
तोलैंअन्लनांष्टिकैंखांऊं॥जवम्पावेंगीवेगमरुमरी॥तवा
मवदैलैंधनरुिसुघरी॥दोहा॥रततनेंह्लीअ्रारदोऊवेगमनर
पतिपास॥समाचारभाषेसकलभएजथासुखरास॥सोर
ठा॥रुमकोंगएपुचायभाईरुमरेकेमनुज॥भयोरुमारोभा
यराएांजीयादेसपति॥७५॥चौपाई॥चलोदूतांतेअवहीना
था॥भयोरुमारोनेमसुसाथा॥नरपतिवोल्योमुनिसुख॥

पाई॥ चलो इहां महि जतन बनवारी॥ उनदोऊ तव विनय वखानी
हम भैया तें कहें वनानी॥ कालिह पधारो आपु इहां ते॥ उन राणां
बुलवाय उहां ते॥ दए मिलाय आपु नरपति सों॥ नरपति वोल्यो
हंसि कैं रति सों॥ तुम हमरी वेगम की सेवा॥ कीनी बहु विधि सु-
ख सों भवा॥ तुम नें इन कूं वहि न वनाए॥ तातें हमहूं वहु सुख
पाए॥ तुम हम तें मांगो मन भाया॥ दैंहैं सब मैं तुम हित धाया
॥दोहा॥ राणांजी कर जोरि कैं नरपति कही सुनाय॥ आपु पधा-
रो इहां तें हमरो मुलक विहाय॥ सोरठा॥ कहि नरपति इक वात
वन वाग्रो महि जतन रहां॥ धर्यो हमारो नाम हम जैहैं अपुनें घ-
रन॥ १६॥ चौपाई॥ अवर सुनो इक वात हमारी॥ उठे देव गिरि
राज विहारी॥ अपुनी इच्छा मानि तहां तें॥ हम रखिवे की विन

श्री
वा
८४

यजहांते॥नहिंरहिहमरेदेसगुसांई॥आयपधारेदेसमुहां
ई॥हमरीसेवननांहीमानें॥प्रभुनेंतुमकोंकरिमनमानें॥
देसरहेतुमरेमेंआई॥तुमसेवकरोमनलाई॥जोलोंतुमरे सव
देसविराजें॥नहिंआंऊंगाहोंकिंहिकाजें॥मारवाउकेदेस
सभीमें॥नांहिनआंवोंजीवकवीमें॥यहसवकहीआपुतेंगो
ऊ॥गयोहूसरेदिनतजिसोऊ॥दोहा॥चल्यातहांतेयवनव
हगयोद्वारिकादेस॥चैनभयोमेवाउमेंघरघरमंगलवेस॥
॥सोरठा॥सवहिंकुटुंवमेंगायरह्योउदयपुरमेंतवहिं॥जेग
एघरनविलायसवहीआएघरनमें॥७७॥चोपाई॥राजभा
गवाटआभए॥उत्थापनमंदिरनिजदए॥याविधिभयोसव

नकेचैना॥ मंदिरमैंसेवनसुखऐना॥ अवरककलीनाथकी॥
लीला॥ कवऊंकरीयहसवसुखसीला॥ एकवेरसुरतकेवासी
श्रीपुरुषोत्तमजसुखरासी॥ करीविजयदिगजिनवऊवेरी॥ ले
खदेखियतजिनकेहेरी॥ करतऊतेदिगविजयप्रतापी॥ दछि·
णदेसपधारेआपी॥ भयोमनोरथप्रभुकेमनमें॥ निरखिर
तनवऊलीनेगनमें॥ मोजाश्रीजीहेतवनाए॥ श्रीजीद्वारसाथ
लेआए॥ दोहा॥ चलतचलतमारगप्रभुगएदिवसवेवीत॥ रत
नेंमोजावऊचुकेआपुपधारेसीत॥ सोरठा॥ प्रभुमनकीनोंसो
चुवर्षदिनांकोंकरिटिके॥ हमनेंजानोंजीतकासीपुरिकेपां
डितन॥ ७८॥ चौपाई॥ तातेंअवकिहिकरेंउपाया॥ यातेंजार
धराएभाया॥ यहविचारकीनीमनमांही॥ कहेंहिदिकेतनसोंह

मजांहीं॥श्रीदाऊजीबैठितजबंहीं॥आपुपधारेमनधरितबंहीं॥जा
यबिनयमोजनकीकीनी॥याहिमनोरथहममनलीनी॥आएमार
गदिनबऊलागे॥इतनेंमोजाबदेसभागे॥अबहमकोंकासीहैजानों
रहेबर्षतबसुखसननमानों॥सोऊकठिनपरतहैहमकों॥तातेंकाऊ
बिधिहोतुमकों॥यातेंहोइमनोरथपूरा॥करोआपुकरुणातेंतूरा॥
दोहा॥सुनिहंसिबोलेआपुप्रभुश्रीदामोदरलाल॥तुमसोंकाछानी
प्रभोश्रीगोस्वामिनबाल॥सोरठा॥धरिहैंजततुअनुसारतुमरीतोसे
बासदा॥धरोआपुअंगारमोजातोहैचारिघरि॥६५॥चौपाई॥सुनि
कैंबिहसेआपुकृपाला॥धर्योसिंगारआपुनंदलाला॥भोगआवतें
आपुपधारे॥श्रीदामोदरनितउहिवारे॥रनबेमोजाआपुधराए॥प्र
भुनेंनिरषिपरमसुखपाए॥दईआयकेंआयसइनकूं॥मालापी
दैमंगलजिनकूं॥लीजोआपुउठाइचरननतें॥नहिंअमपावेंना

पधरनतें॥यहग्रारसकरिग्रापुपधारे॥गएजहां वैठकसुखसारे॥
राजभोगग्रारतिइनकीनी॥सुखीयाकोंकछुइनधनदीनी॥लेऊह
जारमुद्रिकाहमसों॥धरोइन्हेंसंध्यालगितुमसों॥दोहा॥टोडाहते
विग्रासततवसुखीग्राश्रीजीपास॥इन्हेंलोभव्याप्योतवैकहीतयावि
धिरास॥सोरठा॥सुखीग्राकहीसुनायप्रभुग्रावैंनितश्रागपै॥ता
तेंयहबनिग्रावसंखनादजोलोभए॥१००॥चौपाई॥धरेरहेमंग
लतवभए॥श्रीपुरुषोत्तमजूसुखछए॥भईग्रवेनासरराजभोगकी
गएसकलसेवकसुयोगकी॥एकमुहूरतलोप्रभुदेख॥जवनहिं
काहूसोंजापेषे॥ग्रापुपधारेखवदपाइकों॥ग्रारसश्रीहरिरायजार
कों॥कहिखिमनोरजहांप्रभुपोठे॥तहांपधारेनिजश्रमउोठे॥सो
जाहेतजगाएजाई॥स्वप्नमांझनिजदरसदिखाई॥वउेकरेसोजा
उठिमेरे॥वनकोजाततनकोरसवेरे॥सुनिग्रारसततवहीउठिवैठे

श्री वा ८६

लाउसवारीपूछोजेठे॥दोहा॥सुनिखवासदेखीखडीअहैप्रभोघु
उवैहा॥तवैआपुआजेतुरतचलोहांकिघुउवैहा॥सोरठा॥पहिर
पहिरसवआररहैसवारीठडीनित॥हाथीरथसुखपालसदासु
धारीघुउवहिल॥१९॥चौपाई॥चलेततहांतेवेगसिधाए॥घडीएक
मेंप्रभुपदआए॥श्रीदाऊजीकेढिंगगए॥तालिनकोसूमिकसभं
लए॥न्हायवेगहीसखवजाए॥तालारेवालमंदिरमधिआए॥विनं
यकरीमोजापधराए॥पाछेतालामगलभाए॥प्रभुविचारेमनमें
अपुनें॥कहुआयसआएहेसपनें॥यततेंश्रीहरिरायपधारे॥रन
हुश्रीमुखवचनउचारे॥तुमटीकैतसवनकेराजा॥तुमकोचैहेस
वसुधिकाजा॥मोजानांहिउतारेतुमहु॥तातेंजायकहीसुखहु
महु॥दोहा॥हमनपधारेविनरहैंमोजाचरननमांहि॥तातें
हमनहिंवनगएवडेकसोतुमयांहि॥सोरठा॥करेयोतापमन